وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक -16-17

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

27-05 शवाल 1447 हिज्री कमरी, 16-23 शहादत 1405 हिज्री शम्सी, 16 -23 अप्रैल 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَقَدۡ کَتَبۡنَا فِی الزَّبُوۡرِ مِنۡۢ بَعۡدِ الذِّکۡرِ اَنَّ الۡاَرۡضَ یَرِثُہَا عِبَادِیَ الصّٰلِحُوۡنَ○

और निश्चय ही हमने ज़बूर में, उपदेश (ज़िक्र) के बाद यह लिख दिया था कि निश्चित रूप से पृथ्वी का वारिस मेरे नेक (सालेह) बंदे ही बनेंगे।

اِنَّ فِیۡ ہٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوۡمٍ عٰبِدِیۡنَ○

इसमें निश्चय ही इबादत करने वाले लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है।

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰکَ اِلَّا رَحۡمَۃً لِّلۡعٰلَمِیۡنَ○

और हमने तुम्हें नहीं भेजा, बल्कि समस्त संसारों के लिए रहमत के रूप में भेजा है।

अरबों की हलाकत और तबाही की भविष्यवाणी

عَنۡ اُمِّ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ زَیۡنَبَ بِنۡتِ جَحۡشٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ دَخَلَ عَلَیۡہَا فَزِعًا یَقُوۡلُ: لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَیۡلٌ لِّلۡعَرَبِ مِنۡ شَرٍّ قَدِ اقۡتَرَبَ فُتِحَ الۡیَوۡمَ مِنۡ رَدۡمِ یَاۡجُوۡجَ وَمَاۡجُوۡجَ مِثۡلُ ہٰذِہٖ۔ وَحَلَّقَ بِاِصۡبَعَیۡہِ الۡاِبۡہَامِ وَالَّتِیۡ تَلِیۡہَا فَقُلۡتُ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہِ اَنَہۡلِکُ وَفِیۡنَا الصَّالِحُوۡنَ: قَالَ نَعَمۡ اِذَا کَثُرَ الۡخَبَثُ۔

(بخاری کتاب الفتن باب قول النبی ویل للعرب من شرٍ قد اقترب جلد ۲ صفحہ ۱۰۴۶)

हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घबराए हुए उनके पास तशरीफ़ लाए और फरमाने लगे कि खुदा तआला के सिवा कोई पूज्य नहीं है। अरब के लिए उस बुराई और फसाद के कारण हलाकत और तबाही है जो निकट आ गई है। आज याजूज माजूज की दीवार में इतना सा सुराख खुल गया है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने (स्पष्ट करने के लिए) अपनी दो उंगलियों यानी अंगूठे और उसके साथ वाली उंगली को मिलाकर एक घेरा बनाया।

मैंने अर्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम भी नष्ट हो जाएंगे जबकि हमारे बीच नेक लोग भी मौजूद होंगे?

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया, हाँ, जब बुराई और गंदगी बढ़ जाए और वह नेकी पर हावी हो जाए।

अर्ज़-ए-मुकद्दस सालेह लोगों की विरासत है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

इस आयत से साफ मालूम होता है कि "अल-अर्ज़" से मुराद शाम की सरज़मीन है। यह सालेह लोगों की विरासत है और अब तक मुसलमानों के कब्ज़े में रही है। खुदा तआला ने "यरिसुहा" (विरासत में देंगे) फरमाया है, "यमलिकुहा" (मालिक बनाएंगे) नहीं फरमाया। इससे साफ पता चलता है कि इसके वारिस मुसलमान ही रहेंगे, और अगर किसी समय यह किसी और के कब्ज़े में चली भी जाए, तो वह कब्ज़ा उस तरह का होगा जैसे कोई गिरवी रखने वाला अपनी चीज़ अस्थायी रूप से दूसरे को दे देता है। यह खुदा तआला की भविष्यवाणी की महानता है। अर्ज़-ए-शाम चूंकि नबियों की धरती है, इसलिए अल्लाह तआला इसकी बेअदबी नहीं चाहता कि यह गैरों की स्थायी विरासत बन जाए।

"यरिसुहा इबादियस्सालिहून" फरमाया गया है। सालेह लोगों का मतलब यह है कि कम से कम सुधार और अच्छाई की बुनियाद पर खड़े हों। क़ुरआन शरीफ़ में मोमिन की जो तकसीम की गई है, उसके तीन ही दर्जे रखे गए हैं: ज़ालिम, मुक़्तसिद, और साबिक़ बिल-ख़ैरात। ये उनके दर्जे हैं, वरना ये सब इस्लाम के अंदर ही शामिल हैं।

ज़ालिम वह होता है जिसमें अभी बहुत सी गलतियां और कमज़ोरियां होती हैं। मुक़्तसिद वह होता है जो अपने नफ़्स और शैतान से लड़ता रहता है, कभी यह उस पर हावी हो जाता है और कभी वह इस पर काबू पा लेता है—इसमें कुछ गलतियां भी होती हैं और कुछ अच्छाइयां भी।

और साबिक़ बिल-ख़ैरात वह होता है जो इन दोनों दर्जों से आगे निकलकर हमेशा भलाई में आगे बढ़ता रहता है और पूरी तरह अच्छाई पर कायम हो जाता है। वह अपने नफ़्स और शैतान पर काबू पा चुका होता है। क़ुरआन शरीफ़ इन सब को मुसलमान ही कहता है।

(अल-हकम, जिल्द नंबर 6, शुमारा नंबर 10 ,40 नवम्बर 1902, पृष्ठ 7)

तफ़सीर-ए-कबीर से अंश

"इबादी-स्सालेहीन" पवित्र भूमि के वारिस होंगे

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह बनी इस्राईल आयत नंबर 105

وَقُلۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِہٖ لِبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ اسۡکُنُوا الۡاَرۡضَ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ الۡاٰخِرَۃِ جِئۡنَا بِکُمۡ لَفِیۡفًا

की तफ़सीर में फ़रमाते हैं:

"उसकुनुल-अर्ज़" से मुराद मिस्र की सरज़मीन नहीं है, क्योंकि मिस्र में तो वे आबाद नहीं हुए। इससे मुराद कनआन का देश है, यानी वह भूमि जिसका तुमसे वादा किया गया था। इस तरह "अल-अर्ज़" से मुराद वही निर्धारित (वादा की हुई) भूमि है।

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर यह श्रेष्ठता है कि उन्हें जो स्थान मिला, वह मिस्र के बदले के रूप में नहीं था, बल्कि वही स्थान मिला जो उनका अपना वतन था, और फिर दुश्मनों के देश भी उनके अधीन आ गए।

फ-इज़ा जा-अ वअदुल-आख़िरह यानी अब तुम कनआन में जाओ, लेकिन एक समय के बाद तुम्हें वहां से निकलना पड़ेगा। फिर खुदा तआला तुम्हें वापस लाएगा। फिर तुम नाफरमानी करोगे और दूसरी बार अज़ाब आएगा। इसके बाद तुम जला-वतन रहोगे, यहां तक कि तुम्हारी जैसी दूसरी क़ौम के बारे में जो दूसरी तबाही की खबर है, उसका समय आ जाएगा। उस समय फिर तुम्हें अलग-अलग देशों से इकट्ठा करके पवित्र भूमि में वापस लाया जाएगा।

शेष 9 पर

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

इल्हाम-ए-इलाही की रोशनी में हुक्म व अद्ल के फ़ैसले

सैयदना हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इमाम महदी व मसीह मऊऊद की खुशखबरी देते हुए फ़रमाया था कि वह उम्मत में "हुक्म व अद्ल" (न्याय और संतुलन) के रूप में आएँगे। हदीस के शब्द इस प्रकार हैं:

يُوشِكُ مَنْ عَاشَ مِنْكُمْ أَنْ يَلْقَى عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ إِمَامًا مَهْدِيًّا وَحَكَمًا عَدْلًا، فَيَكْسِرَ الصَّلِيبَ، وَيَقْتُلَ الْخِنْزِيرَ

(मुस्नद अहमद बिन हनबल, जिल्द 2, पृष्ठ 411, प्रकाशित मिस्र, रिवायत हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो)

अर्थात् निकट है कि तुम में से जो जीवित रहेगा, वह ईसा इब्न मरियम से मिलेगा। वह इमाम महदी, हुक्म व अद्ल होंगे। वह उम्मत के मतभेदों का निर्णय करेंगे। वह सलीब को तोड़ देंगे और सूअर को समाप्त कर देंगे।

उक्त हदीस में जो यह कहा गया है कि मसीह मऊऊद "हुक्म व अद्ल" होंगे, इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि उनके समय में मुसलमान अनेक फ़िरकों में बँट जाएंगे और उनके बीच तीव्र मतभेद उत्पन्न हो जाएंगे। वे इस्लामी मान्यताओं और आदेशों को समझने में इतनी गलतफहमियों का शिकार हो जाएंगे कि विद्वान भी इन मतभेदों को समाप्त करने में असमर्थ होंगे। तब इमाम महदी, जो खुदा तआला के प्रतिनिधि होंगे, इल्हाम-ए-इलाही की रोशनी में इन मतभेदों को समाप्त करेंगे।

जब खुदा तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मऊऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम को इमाम महदी व मसीह मऊऊद बनाकर "हुक्म व अद्ल" के पद पर नियुक्त किया, तब मुसलमानों के फ़िरकों में इस क़दर मतभेद हो चुके थे कि आम लोग ही नहीं बल्कि बड़े-बड़े विद्वान भी आपसी झगड़ों में लगे हुए थे। अपने-अपने बनाए हुए विश्वासों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे, बल्कि सामने वाले को समझाने के बजाय मुसलमान कहलाने वाले मुसलमानों के विरुद्ध तलवार के साथ युद्ध में लगे हुए थे, और आज भी हैं। छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे को धर्म से बाहर घोषित करके हत्या तक कर रहे थे। और जो आप पर ईमान नहीं लाए, उनका अभी भी यही हाल है।

इन सुधारों का उल्लेख करने से पहले, जो हज़रत मसीह मऊऊद अलैहिस्सलाम ने खुदा के आदेश से और इल्हाम-ए-इलाही की रोशनी में किए, उन कुछ गलत मान्यताओं का उल्लेख किया जाता है जो मुसलमानों में फैल चुकी थीं और जिनकी आपने सुधार की।

(1) मुसलमानों में ईसाइयों के प्रभाव से कुरआन व हदीस के विरुद्ध यह विश्वास फैल गया था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने भौतिक शरीर सहित आकाश पर जीवित हैं और वही मुसलमानों के सुधार के लिए उसी शरीर के साथ उतरेंगे। खुदा तआला ने हज़रत अक़दस मसीह मऊऊद अलैहिस्सलाम को कुरआन मजीद से ऐसे तीस प्रमाण सिखाए, जिनसे दिन के उजाले की तरह सिद्ध हो गया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा तआला ने सलीबी मृत्यु से बचा लिया था और आप हिजरत करके बनी इस्राईल की खोई हुई भेड़ों की खोज में निकल गए थे। 120 वर्ष की आयु में कश्मीर में आपकी मृत्यु हुई और श्रीनगर के मोहल्ला खानयार में आपकी कब्र मौजूद है। आज न केवल मुसलमान बल्कि अन्य धर्मों के बुद्धिजीवी और शोधकर्ता भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु को सिद्ध कर रहे हैं और ऐसी शोध भी प्रकाशित कर चुके हैं जिनसे कश्मीर की ओर उनकी हिजरत प्रमाणित होती है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु को स्पष्ट करके आपने ईसाइयों के इस झूठे विश्वास को तोड़ दिया कि यीशु मसीह खुदा या खुदा का पुत्र है, और मुसलमानों के इस गलत विश्वास का भी खंडन कर दिया कि वह शारीरिक रूप से आकाश पर गए हैं और उसी शरीर के साथ उतरेंगे। इस महान सत्य के प्रकट होने के बाद अब मुसलमानों और ईसाइयों के विद्वान अहमदियत अर्थात् सच्चे इस्लाम को स्वीकार कर रहे हैं, और जिन्हें यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, वे मसीह मऊऊद के आगमन के विश्वास का ही इंकार करके उसे कहानी बता रहे हैं, और केवल कुरआन व हदीस ही नहीं बल्कि उम्मत के उन हजारों बुज़ुर्गों को भी झूठा ठहरा रहे हैं जो इमाम महदी व मसीह मऊऊद के आने की प्रतीक्षा करते रहे और वह्य-ए-इलाही की रोशनी में इसकी सूचना देते रहे।

(2) मुसलमानों में यह गलतफहमी भी फैल गई थी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसे अंतिम नबी हैं कि उनके बाद क़यामत तक कोई नबी नहीं आ सकता, चाहे वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुयायी ही क्यों न हो।

आपने कुरआन मजीद के प्रमाणों से सिद्ध किया कि नबूवत एक पद है जिसे खुदा तआला ने अब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुयायियों के लिए निर्धारित कर दिया है। और फ़रमाया कि मैं भी चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सेवक हूँ, इसलिए इसी सेवकत्व के कारण खुदा तआला ने मुझे नबूवत और संवाद का सम्मान प्रदान किया है।

हज़रत अक़दस मसीह मऊऊद अलैहिस्सलाम ने मुसलमानों को इस भूल की ओर भी ध्यान दिलाया कि वे एक ओर यह मानते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अंतिम नबी हैं, और दूसरी ओर बनी इस्राईल के नबी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद भी उम्मत में नबी के रूप में मानते हैं, और इस प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपमान करते हैं। आपने फ़रमाया:

"यदि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में से न होता और आपकी पैरवी न करता, तो यदि संसार के सभी पहाड़ों के बराबर मेरे कर्म होते, तब भी मुझे यह सम्मान—खुदा से वार्तालाप—कभी प्राप्त न होता, क्योंकि अब मुहम्मदी नबूवत के सिवा सभी नबूवतें बंद हैं। शरियत वाला नबी नहीं आ सकता, और बिना शरियत के नबी हो सकता है, परन्तु वही जो पहले उम्मती हो।"

(तजल्लियात-ए-इलाहिया, रूहानी खज़ाइन, जिल्द 20, पृष्ठ 411-412)

अल्हम्दुलिल्लाह कि पिछले सवा सौ वर्षों में लाखों लोगों ने अपनी गलती सुधार कर हज़रत मसीह मऊऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाया है। यहाँ तक कि बड़े-बड़े अरब विद्वान भी, जब उन पर उनकी भूल स्पष्ट हुई, तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके इस सच्चे सेवक पर दुरूद भेज रहे हैं।

(3) मुसलमानों में कुरआन व हदीस के विरुद्ध यह खतरनाक गलत विश्वास भी फैला हुआ था कि तलवार का जिहाद अभी भी जारी है और आने वाला इमाम महदी तलवार के द्वारा इस्लाम का प्रसार करेगा। हज़रत अक़दस मसीह मऊऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्पष्ट रूप से बता दिया था कि मसीह मऊऊद के समय में तलवार का जिहाद समाप्त हो जाएगा। जैसा कि हदीस बुखारी में है कि जब मसीह मऊऊद आएँगे तो "यज़उल हरब" अर्थात युद्ध समाप्त कर देंगे।

(बुखारी, किताबुल-अंबिया, बाब नुज़ूल ईसा बिन मरियम)

और एक हदीस में है: "व लयज़अन्नल जिज्या" अर्थात जिज्या को भी समाप्त कर देंगे। (मुस्लिम)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि खुदा ने मुझे इस समय इमाम महदी व मसीह मऊऊद बनाकर भेजा है और मेरे समय में तलवार का जिहाद समाप्त है। आपने फ़रमाया:

"हे इस्लाम के विद्वानो और मौलवियो! मेरी बात सुनो! मैं सच कहता हूँ कि अब जिहाद का समय नहीं है। खुदा के पवित्र नबी की अवज्ञा मत करो। मसीह मऊऊद, जिसका आना निश्चित था, आ चुका है और उसने आदेश दिया है कि अब धार्मिक युद्धों से, जो तलवार और रक्तपात के साथ होते हैं, दूर हो जाओ। जो मुझे स्वीकार करेगा, वह न केवल इन उपदेशों से दूर रहेगा, बल्कि इस मार्ग को अत्यंत बुरा और खुदा के क्रोध का कारण मानेगा।"

(गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद)

और फ़रमाया:

"अब जब मसीह मऊऊद आ गया है, तो हर मुसलमान का कर्तव्य है कि जिहाद से रुक जाए। यदि मैं न आया होता तो कुछ हद तक इस गलतफहमी का बहाना हो सकता था, परन्तु अब मैं आ गया हूँ और तुमने वादा का दिन देख लिया है। इसलिए अब धार्मिक रूप से तलवार उठाने वालों के पास खुदा के सामने कोई बहाना नहीं। जो व्यक्ति हदीसों को पढ़ता और कुरआन को देखता है, वह समझ सकता है कि यह जिहाद का तरीका, जिस पर इस समय बहुत से लोग चल रहे हैं, इस्लामी जिहाद नहीं है, बल्कि यह मन की बुरी इच्छाओं या स्वर्ग की गलत लालसा के कारण किए जाने वाले अनुचित कार्य हैं।"

और फ़रमाया:

"देखो, मैं एक आदेश लेकर तुम्हारे पास आया हूँ, वह यह है कि अब से तलवार के जिहाद का अंत है, परन्तु अपने मन को शुद्ध करने का जिहाद बाकी है, और यह मैंने अपनी ओर से नहीं कहा, बल्कि खुदा का यही आदेश है।"

(गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद)

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

तौहीद-ए-इलाही की स्थापना के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र जीवन का हृदयस्पर्शी और ईमान बढ़ाने वाला वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 फ़रवरी 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

सभी नबी दुनिया में तौहीद (एक ईश्वर की उपासना) की स्थापना के लिए आए और उन्होंने अपनी-अपनी क़ौमों को इसकी शिक्षा दी, लेकिन दुर्भाग्य से अधिकांश लोगों ने इस तौहीद को छोड़ दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी यही संदेश लेकर आए, इसी काम को जारी रखने के लिए आए और अपने मानने वालों में इसी तौहीद की भावना पैदा करने के लिए आए। इस संबंध में जो स्थान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का है, वह किसी और का नहीं है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यदि तौहीद को मानने की शिक्षा दी, तो खुदा तआला से ज्ञान पाकर तौहीद को स्वीकार करने के प्रमाण भी दिए। आपने यदि शिर्क (बहुदेववाद) के खिलाफ संघर्ष किया, तो बिना प्रमाण के नहीं, बल्कि शिर्क की बुराई को समझाया और उसे स्पष्ट करके उसके विरुद्ध घृणा पैदा की। आपके अनुयायियों ने अपने आचरण से यह सिद्ध कर दिया कि तौहीद की शिक्षा और शिर्क से घृणा उनके रग-रग में बस गई है।

यह इसलिए हुआ कि जो शिक्षा खुदा तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर उतारी, वह इतनी व्यापक और प्रभावशाली थी कि यह संभव ही नहीं था कि कोई उसकी गहराई को समझ ले और फिर उससे दूर हो सके।

आपकी यह शिक्षा, जिसने आपके मानने वालों पर प्रभाव डाला, इसलिए प्रभावशाली थी कि आपका प्रत्येक कथन और कार्य उसी का सच्चा प्रतिबिंब था। इस संबंध में खुदा तआला ने आपको जो महान शिक्षा दी, आप स्वयं उसका जीवंत उदाहरण थे।

आपको चिंता इस बात की थी कि जिस प्रकार अन्य क़ौमों ने अपने नबियों को सजदे के योग्य बना लिया है, कहीं मुस्लिम उम्मत में भी यह भयानक पाप पैदा न हो जाए। आपने इससे पनाह मांगी कि आपको खुदा तआला के मुकाबले पर कभी लाया जाए और अपनी उम्मत को भी यह नसीहत की कि मुझे कभी शिर्क का माध्यम न बनाना।

(मसनद अहमद बिन हंबल, भाग 3, पृष्ठ 54, मसनद अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो, हदीस 7352, आलमुल कुतुब, बैरूत, 1998)

तुम्हारी नज़र कभी खुदा तआला के अलावा किसी और पर न पड़े। पिछले ख़ुत्बों में मैंने खुदा तआला के प्रेम या इबादत का ज़िक्र किया था। उनमें जो बातें बयान की थीं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जिन घटनाओं को इस संदर्भ में प्रस्तुत किया था, वे सभी तौहीद की ओर मार्गदर्शन करती थीं या उनमें तौहीद की स्थापना के लिए आपका जोश और तड़प दिखाई देती थी। यह बात जहाँ तौहीद की स्थापना के लिए आपके उच्चतम स्थान और आपकी उस पवित्र प्रकृति को दर्शाती है, जो बचपन से ही खुदा तआला ने आपको प्रदान की थी, वहीं खुदा तआला की उतरी हुई पूर्ण शिक्षा से भी हमें इसकी गहराई का ज्ञान होता है।

क़ुरआन-ए-करीम में बार-बार विभिन्न पहलुओं से हमें तौहीद की शिक्षा दी गई है, जैसा कि खुदा तआला सूरह अनबिया में फ़रमाता है:

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ۔ (الانبیاء:26)

और हमने तुझसे पहले कोई रसूल नहीं भेजा, मगर हम उसकी ओर यह वही करते थे कि निश्चय ही मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, अतः केवल मेरी ही उपासना करो।

फिर इबादत के जो तरीके आपको सिखाए गए और जिस प्रकार आपने तौहीद के अधिकार को पूरा करते हुए इबादत की, किसी अन्य धर्म में उसका थोड़ा सा भी उदाहरण नहीं मिलता।

फिर खुदा तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है:

قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ (الزمر:12)

तू कह दे कि मुझे तो आदेश दिया गया है कि मैं खुदा तआला की उपासना करूँ, अपने धर्म को उसी के लिए पूर्णतः शुद्ध रखते हुए।

इसलिए जब एक सच्चा मुसलमान भी इसे पढ़ेगा, तो वह भी यह घोषणा करेगा कि मैं पूरी निष्ठा के साथ खुदा तआला की इबादत करूँगा और शुद्ध तौहीद की स्थापना का प्रयास करूँगा और उस आदर्श पर चलूँगा, जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस घोषणा के साथ स्थापित किया, जिसका आदेश क़ुरआन शरीफ ने दिया। यदि हम शुद्ध तौहीद की स्थापना के साथ अपनी इबादतों का स्तर बनाएँगे, तो हम एक क्रांति लाने वाले बन सकते हैं, अन्यथा ये केवल बातें ही रह जाएँगी और तभी हम सच्चे एकेश्वरवादी भी कहलाएँगे।

फिर खुदा तआला फ़रमाता है:

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا (النساء:37)

और खुदा तआला की उपासना करो और किसी भी चीज़ को उसका साझी न ठहराओ।

एक और स्थान पर खुदा तआला फ़रमाता है:

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ۔ (البقرۃ:164)

और तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वही अत्यन्त कृपालु और दयालु है।

फिर क़ुरआन-ए-करीम के अंत में खुदा तआला अपनी तौहीद की घोषणा करता है:

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ۔ اَللّٰهُ الصَّمَدُ۔ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ۔ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ۔ (الاخلاص:2-5)

तू कह दे कि वह खुदा तआला एक ही है। खुदा तआला निरपेक्ष है। न उसने किसी को जन्म दिया और न वह जन्मा गया। और उसका कोई समकक्ष नहीं है।

यहाँ खुदा तआला ने हर प्रकार के शिर्क के खंडन की घोषणा की है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहा कि इसे दुनिया में प्रकट कर दो। अतः जब आपके अनुयायी इसे पढ़ें, तो हमारा भी कर्तव्य है कि हम इस शुद्ध तौहीद की घोषणा करें, जिसका इस सूरह में और कई अन्य स्थानों पर उल्लेख है, और अपने कथन व कर्म से दुनिया को यह बताएं कि खुदा तआला ही एकमात्र है और हर चीज़ से निरपेक्ष है, बल्कि हर चीज़ उसी की मोहताज है। वह न किसी का पिता है, न पुत्र, और न ही उसका कोई समकक्ष हो सकता है।

यह ऐसी घोषणा है जो हर धर्म की बिगड़ी हुई शिक्षाओं का खंडन करती है और यही वह शिक्षा है, जिसके प्रचार से मनुष्य को खुदा तआला का निकटता प्राप्त हो सकती है। इसका सबसे उच्च और श्रेष्ठ उदाहरण हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। आपकी पूरी ज़िंदगी

तौहीद की स्थापना के लिए बीती, बल्कि जैसा कि बताया गया, बचपन से ही ख़ुदा तआला ने आपको शुद्ध तौहीद के लिए तैयार किया था। ये कुछ उदाहरण हैं जो मैंने क़ुरआन शरीफ से दिए हैं। वास्तव में यह संदेश तो पूरे क़ुरआन-ए-करीम में भरा हुआ है।

अब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत के कुछ घटनाएँ प्रस्तुत करता हूँ, जिनसे बचपन से लेकर नुबूवत के दावे तक और आपकी पूरी ज़िंदगी में तौहीद के लिए आपकी तड़प और प्रयास का वर्णन मिलता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रकृति इतनी पवित्र थी कि तौहीद से प्रेम आपके रग-रग में बसा हुआ था और नुबूवत प्राप्त होने से पहले ही आपकी प्रकृति शिर्क और मूर्तिपूजा से घृणा करती थी।

अतः एक रिवायत में आता है कि हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती थीं कि "बुवाना" वह बुत था जिसकी क़ुरैश बहुत इज़्ज़त करते थे। उसके पास हाज़िरी देकर क़ुर्बानियाँ करते और साल में एक दिन वहाँ एतिकाफ़ करतेथे। अबू तालिब भी अपनी क़ौम के साथ वहाँ जाते और रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी साथ ले जाना चाहते थे, मगर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इंकार कर देते। यहाँ तक कि एक बार आपकी फूफियाँ और अबू तालिब आपसे बहुत नाराज़ हुए और कहने लगे कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप क्या चाहते हैं? क्या आप अपनी क़ौम के त्योहार में शामिल होकर उनकी सभा को नहीं बढ़ाएँगे?

आख़िर एक बार अपनी फूफियों के ज़ोर देने पर आप वहाँ चले तो गए, मगर बहुत डरकर वापस आ गए और कहा कि मैंने वहाँ एक अजीब दृश्य देखा है। फूफियों ने कहा कि इतने नेक इंसान पर शैतान असर नहीं कर सकता, बताइए आपने क्या देखा? आपने बताया कि जैसे ही मैं उस बुत के पास जाने लगता, तो एक सफेद कपड़े पहने हुए व्यक्ति ज़ोर से कहता—ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! पीछे हटो और इस बुत को मत छुओ। इसके बाद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी भी मुशरिकों के किसी त्योहार में भाग नहीं लिया और खुदा तआला ने हमेशा आपको ऐसी शिर्क वाली रस्मों से सुरक्षित रखा।

(उद्धृत दलाइलुन्नुबुव्वत, बैहक़ी, भाग 1, पृष्ठ 138, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

यह घटना नुबूवत के दावे से पहले की है।

बचपन में अपने चाचा अबू तालिब के साथ शाम की यात्रा के दौरान जब ईसाई राहिब बहीरा से मुलाकात हुई, तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसके एक प्रश्न के उत्तर में कहा था कि मुझसे "लात" और "उज़्ज़ा" बुतों के बारे में मत पूछो। खुदा की क़सम! इनसे बढ़कर मुझे किसी चीज़ से नफ़रत नहीं।

(उद्धृत दलाइलुन्नुबुव्वत, बैहक़ी, भाग 2, पृष्ठ 35, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का व्यापारिक माल लेकर शाम देश गए, तो आपने वह सामान बेचकर उसके बदले दूसरा सामान खरीदा। इसी दौरान आपका एक व्यक्ति से किसी मामले में विवाद हो गया। उस व्यक्ति ने कहा—लात और उज़्ज़ा की क़सम खाओ, तभी मैं तुम्हारी बात मानूँगा।

तो रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया—मैंने कभी भी इन बुतों की क़सम नहीं खाई। मैं इनके पास से गुज़रता भी हूँ तो मुँह फेर लेता हूँ, और तुम मुझसे कहते हो क़सम खाओ! यह कैसे हो सकता है?

(अत्तबक़ातुल कुबरा, भाग 1, पृष्ठ 124, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

इसी तौहीद को प्राप्त करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ग़ार-ए-हिरा में भी जाया करते थे। पहले भी इसका उल्लेख हो चुका है। वहाँ एकमात्र खुदा की इबादत और तौहीद के लिए आपके दिल में गहरी तड़प होती थी।

इसका चित्रण एक स्थान पर हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस प्रकार किया है कि ग़ार-ए-हिरा मक्का के पहाड़ों में से एक प्रसिद्ध पहाड़ "हिरा" में स्थित है, जो मक्का से लगभग तीन मील की दूरी पर है। आजकल इसे "जबल-ए-नूर" कहा जाता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बुतों से तो नफ़रत थी ही, आप बुतों की पूजा करने वालों और एकमात्र खुदा से दूर होने वालों पर भी दुख व्यक्त करते थे।

आप केवल स्वयं ही नहीं, बल्कि लोगों के लिए भी दुखी रहते थे कि वे क्यों बुतों की पूजा करते हैं। नुबूवत से पहले आप बस्ती से दूर इसगुफा में इबादत किया करते थे। जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चालीस वर्ष के हुए, तो एक दिन जिब्रईल अलैहिस्सलाम प्रकट हुए और आप पर पहली वह्ी उतरी, जिसके माध्यम से खुदा तआला ने आपको नबी बनाकर भेजा।

इस पहली वह्ी के साथ ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लोगों को तौहीद की ओर बुलाना शुरू किया और शिर्क के विरुद्ध शिक्षा देना आरंभ कर दिया। लेकिन शुरुआत में आपने अपने मिशन का खुला प्रचार नहीं किया, बल्कि बहुत शांति और गोपनीयता के साथ काम शुरू किया और अपनी शिक्षा को केवल अपने निकट संपर्क वालों तक सीमित रखा।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, लेखनी हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 117, 120) (फरहंग सीरत, पृष्ठ 101)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

"हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सत्य के प्रकट करने के लिए एक महान सुधारक थे, जो खोई हुई सच्चाई को फिर से दुनिया में लाए। इस गौरव में कोई भी नबी आपके साथ साझेदार नहीं कि आपने पूरी दुनिया को अंधकार में पाया और आपके प्रकट होने से वह अंधकार प्रकाश में बदल गया। जिस क़ौम में आप प्रकट हुए, आप उस समय तक नहीं उठाए गए जब तक कि उस पूरी क़ौम ने शिर्क का वस्त्र उतारकर तौहीद का वस्त्र धारण नहीं कर लिया।

और केवल इतना ही नहीं, बल्कि वे लोग ईमान के ऊँचे दर्जों तक पहुँच गए और उनसे सत्य, वफ़ादारी और विश्वास के ऐसे कार्य प्रकट हुए, जिनकी मिसाल दुनिया में कहीं नहीं मिलती। ऐसी सफलता किसी भी नबी को, सिवाय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के, प्राप्त नहीं हुई।

यही एक बड़ी दलील है आपकी नुबूवत की कि आप ऐसे समय में भेजे गए जब दुनिया घोर अंधकार में थी और एक महान सुधारक की आवश्यकता थी। फिर आपने उस समय दुनिया से विदा ली, जब लाखों लोग शिर्क और बुतपरस्ती को छोड़कर तौहीद और सच्चे मार्ग को अपना चुके थे।

वास्तव में यह पूर्ण सुधार केवल आप ही के साथ विशेष था कि आपने एक जंगली स्वभाव और पशु जैसे आचरण वाली क़ौम को मानवीय गुण सिखाए—या दूसरे शब्दों में कहें कि पशुओं को मनुष्य बनाया, फिर मनुष्यों को शिक्षित मनुष्य बनाया, फिर शिक्षित मनुष्यों को खुदा वाला मनुष्य बनाया और उनमें आध्यात्मिकता भर दी।

उन्होंने खुदा की राह में बकरियों की तरह कुर्बानी दी, चींटियों की तरह पैरों तले कुचले गए, मगर ईमान को नहीं छोड़ा, बल्कि हर मुसीबत में आगे बढ़ते रहे।

इसलिए निस्संदेह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आध्यात्मिकता स्थापित करने के दृष्टिकोण से दूसरे आदम थे, बल्कि सच्चे आदम वही थे, जिनके माध्यम से सभी मानवीय गुण पूर्णता को पहुँचे और मानव स्वभाव की कोई शाखा बिना फल के न रही। और ख़ातम होने का अर्थ केवल समय में बाद में आना नहीं, बल्कि यह भी है कि नुबूवत की सभी पूर्णताएँ आप पर समाप्त हो गईं।"

(लेक्चर सियालकोट, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 20, पृष्ठ 206–207)

फिर एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

"हे प्रभु! तेरा हजार-हजार शुक्र है कि तूने हमें अपनी पहचान का मार्ग स्वयं बताया और अपनी पवित्र किताबें उतारकर हमें सोच और बुद्धि की गलतियों से बचाया। और दुरूद व सलाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उनके परिवार और साथियों पर, जिनके द्वारा खुदा ने एक भटकी हुई दुनिया को सीधा रास्ता दिखाया।

वह पालनहार और लाभ पहुँचाने वाले, जिन्होंने भटकी हुई सृष्टि को फिर सही मार्ग पर लाया। वह उपकारी, जिन्होंने लोगों को शिर्क और बुतों की मुसीबत से छुड़ाया। वह प्रकाश और प्रकाश फैलाने वाले, जिन्होंने तौहीद की रोशनी को दुनिया में फैलाया। वह ज्ञानी और युग के चिकित्सक, जिन्होंने बिगड़े हुए दिलों

को सीधा किया।

वह कृपालु और चमत्कार दिखाने वाले, जिन्होंने मृतकों को जीवन का जल पिलाया। वह दयालु, जिन्होंने उम्मत के लिए दुख उठाया। वह साहसी, जिन्होंने हमें मृत्यु के मुँह से निकाला। वह विनम्र, जिन्होंने बंदगी में सिर झुकाया और अपने अस्तित्व को मिट्टी में मिला दिया।

वह पूर्ण एकेश्वरवादी और ज्ञान के सागर, जिन्हें केवल खुदा का ही वैभव प्रिय था और जिन्होंने अन्य सबको अपनी नज़र से गिरा दिया। वह रहमान की शक्ति का चमत्कार, जो अनपढ़ होकर भी सब पर सत्य ज्ञान में विजयी हुए और हर क़ौम को उनकी गलतियों पर सचेत किया।"

(बराहीने अहमदिया, भाग 1, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 1, पृष्ठ 17)

फिर एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

"आज दुनिया में 'तौहीद' नाम की जो चीज़ है, वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत के अलावा किसी और समूह में नहीं पाई जाती, और क़ुरआन शरीफ के अलावा कोई ऐसी किताब नहीं मिलती, जो करोड़ों लोगों को खुदा की एकता पर स्थापित करती हो और अत्यंत सम्मान के साथ सच्चे खुदा की ओर मार्गदर्शन करती हो।

हर क़ौम ने अपना-अपना बनाया हुआ खुदा बना लिया है, लेकिन मुसलमानों का खुदा वही है, जो प्राचीन काल से है, जो कभी नष्ट नहीं होता, न बदलता है और अपनी शाश्वत विशेषताओं में वैसा ही है जैसा पहले था।"

(बराहीने अहमदिया, भाग 2, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 1, पृष्ठ 117–118)

लेकिन अफसोस कि आज उम्मत-ए-मुहम्मदिया भी इस तौहीद के सम्मान को भूलती जा रही है और उनमें वह सच्ची तौहीद नहीं रही, जिसकी शिक्षा खुदा तआला ने दी और जिसकी समझ और प्रेरणा हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दी।

तौहीद-ए-खालिस को भूल जाने के कारण खुदा तआला के गुणों पर भी वह सच्चा ईमान नहीं रहा, जो एक मुसलमान की पहचान होना चाहिए।

ऐसी स्थिति में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे अनुयायियों का कर्तव्य है कि वे तौहीद की वास्तविकता को समझें और अपने अंदर विशेष परिवर्तन पैदा करें। यह इबादत का विशेष महीना रमज़ान का है, इसमें विशेष रूप से इसका प्रयास करना चाहिए और इसके लिए दुआ करनी चाहिए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी पूरी ज़िंदगी जिस प्रकार तौहीद की स्थापना के लिए प्रयास किया, यदि हमें आपसे प्रेम का दावा है, तो हमें भी इसके लिए विशेष प्रयास करना होगा।

खुदा तआला के आदेश से तौहीद की स्थापना के लिए आपने किस प्रकार प्रयास किए और इसके लिए कठिनाइयाँ भी उठाईं—इसको हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक स्थान पर इस प्रकार बयान किया है कि...

"क़ुरआन-ए-करीम में खुदा तआला रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़रमाता है:

اَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ

ऐ मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! तू दुनिया के कोने-कोने के लोगों को चेतावनी दे, लेकिन सबसे पहले अपने निकट संबंधियों को चेतावनी दे। क्योंकि उन पर तेरा दोहरा हक़ है—एक यह कि वे भी बाकी दुनिया की तरह विनाश की ओर जा रहे हैं, और दूसरा यह कि वे तेरे रिश्तेदार हैं और उनके पूर्वजों ने तेरे साथ अच्छा व्यवहार किया था।

अंग्रेज़ी में भी एक कहावत मशहूर है कि Charity begins at home, अर्थात भलाई और सहायता की शुरुआत घर से होती है। इसी प्रकार उपदेश और समझाने का कार्य भी हमेशा घर से ही शुरू होना चाहिए।

अतः मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस आदेश का पालन इस तरह किया कि आप मक्का की परंपरा के अनुसार कोह-ए-सफ़ा पर खड़े हो गए और विभिन्न क़बीलों को नाम लेकर बुलाना शुरू किया। सबसे पहले आपने आल-ए-ग़ालिब को बुलाया, और वे मस्जिद हराम से निकलकर सफ़ा पहाड़ी के नीचे आ गए।

उस समय अबू लहब ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहा कि आल-ए-ग़ालिब तो आ गए हैं, आप जो कहना चाहते हैं कह दें। लेकिन आपने उसकी बात की ओर ध्यान नहीं दिया और क़बीला लुई के लोगों को पुकारा। वे भी आ गए, तो अबू लहब ने फिर कहा कि अब तो लुई क़बीला भी आ गया है, अब आप बताइए कि आप क्या कहना चाहते हैं।

लेकिन रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर भी उसकी बात को महत्व नहीं दिया और आल-ए-मुर्रा को बुलाया। वे भी आ गए। फिर आपने आल-ए-किलाब और आल-ए-कुसय को बुलाया। यहाँ तक कि सब लोग इकट्ठे हो गए। जो लोग स्वयं नहीं आ सके, उन्होंने अपने प्रतिनिधि भेज दिए, ताकि वे पता करके उन्हें बताएं कि आज किस उद्देश्य से बुलाया गया है।

जब मक्का के सभी क़बीले, क़ुरैश सहित, एकत्र हो गए, तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे संबोधन शुरू किया और फरमाया—देखो, यदि मैं तुमसे यह कहूँ कि इस पहाड़ के पीछे एक बहुत बड़ा लश्कर जमा है, जो तुम पर हमला करना चाहता है, तो क्या तुम मेरी इस बात को मानोगे या नहीं?

उन्होंने कहा—क्यों नहीं, हम आपकी बात अवश्य मानेंगे, क्योंकि हमने हमेशा आपको सच्चा पाया है। मक्का के हालात से परिचित लोग जानते हैं कि यह बात वास्तव में ऐसी थी, जैसे किसी असंभव चीज़ को संभव मानने को कहा जाए, क्योंकि मक्का के लोग अपने पशु घाटी में चराते थे और वह ऐसा क्षेत्र है जहाँ किसी सेना का छिपना असंभव था।

लेकिन उन लोगों पर आपकी सच्चाई का इतना प्रभाव था कि उन्होंने कहा—भले ही हमारी आँखें इसे न मानें, हम आपकी बात को अवश्य मानेंगे, क्योंकि आपकी सच्चाई हमारे लिए निश्चित है।

जब उन्होंने एक स्वर में आपके प्रति अपने विश्वास का इज़हार किया, तो आपने फरमाया—सुनो! मैं तुम्हें एक महत्वपूर्ण समाचार देता हूँ, और वह यह है कि मुझे खुदा तआला की ओर से रसूल बनाकर भेजा गया है। इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि तुम खुदा तआला के दंड से बचना चाहते हो, तो मेरी आज्ञा का पालन करो।

इतना कहना था कि अबू लहब गुस्से में बोल उठा—تَبًّا لَّكَ سَائِرَ الْاَيَّامِ اَلِهٰذَا جَمَعْتَنَا—(नऊज़ूबिल्लाह) तुझ पर विनाश हो! क्या इसी बात के लिए तूने हमें इकट्ठा किया था?

और इसी प्रकार दूसरे लोग भी हँसी-मज़ाक करते हुए और उपहास उड़ाते हुए वहाँ से चले गए।"

(तफ़्सीर कबीर, भाग 9, पृष्ठ 582–583, संस्करण 2023)

लेकिन इस उपहास और विरोध ने आपको तौहीद की स्थापना के प्रयास से नहीं रोका। आप लगातार इसी प्रयास में लगे रहे। जैसा कि बताया गया, उपहास हुआ और फिर विरोध भी बढ़ता गया।

इस विरोध के इतिहास को हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐतिहासिक पुस्तकों के आधार पर इस प्रकार वर्णित किया है:

"जितना महान मिशन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लेकर आए थे, उतना ही अधिक विरोध होना स्वाभाविक था, क्योंकि आप ऐसे समय में भेजे गए थे जब अंधकार अपने चरम पर था, और आवश्यक था कि प्रकाश के आने पर अंधकार की शक्तियाँ पूरी ताकत से उसका विरोध करें।

अतः ऐसा ही हुआ कि पिछले सभी नबियों की तुलना में आपका सबसे अधिक विरोध हुआ। इसके प्रमुख कारणों में से एक यह था कि क़ुरैश अत्यंत मूर्तिपूजक क़ौम थी और बुतों के प्रति उनकी श्रद्धा इतनी गहरी थी कि उनके विरुद्ध एक शब्द भी सुनना उन्हें स्वीकार नहीं था।

खाना काबा, जो केवल खुदा तआला की इबादत के लिए बनाया गया था, उसमें भी उन्होंने सैकड़ों बुत रख दिए थे और अपनी हर आवश्यकता के लिए उन्हीं की ओर देखते थे। अब इस्लाम आया, जिसका मूल सिद्धांत ही तौहीद था, और स्पष्ट आदेश था कि किसी मनुष्य, पेड़, पत्थर या तारे के सामने सिर न झुकाओ, बल्कि—

وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ

केवल उसी के सामने झुको जिसने इन सबको पैदा किया है।

सिर्फ यही नहीं, बल्कि क़ुरैश के बुतों को अपमानजनक शब्दों में याद किया जाता था और उन्हें जहन्नम का ईंधन बताया जाता था। इन बातों ने क़ुरैश

को क्रोधित कर दिया और वे एकजुट होकर इस्लाम को मिटाने के लिए खड़े हो गए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 132–133)

और भी कई कारण थे, लेकिन यह एक बड़ा कारण था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"जब कोई नबी या रसूल खुदा की ओर से भेजा जाता है और उसका समूह लोगों को योग्य, सच्चा, साहसी और उन्नति करने वाला दिखाई देता है, तो अन्य क़ौमों और समूहों के दिलों में उसके प्रति ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न हो जाता है। विशेष रूप से हर धर्म के विद्वान और गद्दी-नशीन लोग अधिक विरोध करते हैं, क्योंकि उस व्यक्ति के आने से उनकी आय और प्रतिष्ठा पर असर पड़ता है।

उनके अनुयायी उनके पास से हटकर उस ईश्वर-प्रेरित व्यक्ति की ओर आने लगते हैं, क्योंकि वे उसमें सभी नैतिक, आध्यात्मिक और ज्ञान संबंधी गुण देखते हैं। इसलिए समझदार लोग यह समझने लगते हैं कि जो सम्मान इन विद्वानों को दिया गया था, वे अब उसके योग्य नहीं रहे।

इस कारण विद्वान और पीर वर्ग हमेशा नबियों से ईर्ष्या करता आया है। उनकी यह शत्रुता वास्तव में व्यक्तिगत इच्छाओं के कारण होती है और वे नुकसान पहुँचाने की योजनाएँ बनाते रहते हैं।

कई बार वे अपने दिल में यह भी महसूस करते हैं कि वे खुदा के एक सच्चे बंदे को कष्ट देकर खुदा के क्रोध के पात्र बन गए हैं, फिर भी ईर्ष्या उन्हें विरोध की ओर खींचती रहती है।

इन्हीं कारणों से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में मुशरिकों, यहूदियों और ईसाइयों के विद्वान न केवल सत्य को स्वीकार करने से वंचित रहे, बल्कि कठोर विरोध पर उतर आए। वे इस प्रयास में लग गए कि किसी तरह इस्लाम को दुनिया से मिटा दें।

चूँकि प्रारंभ में मुसलमानों की संख्या कम थी, इसलिए उनके विरोधियों ने घमंड के कारण उनके साथ अत्यंत कठोर व्यवहार किया। वे नहीं चाहते थे कि यह ईश्वरीय पौधा पृथ्वी पर स्थापित हो। उन्होंने सच्चे लोगों को नष्ट करने के लिए हर संभव प्रयास किया और उन्हें सताने का कोई अवसर नहीं छोड़ा।

उनका भय यह था कि यदि यह धर्म स्थापित हो गया, तो उनकी क़ौम और धर्म का पतन हो जाएगा। इसी भय के कारण उन्होंने अत्यंत अत्याचारी और निर्दयी कार्य किए।

उन्होंने अनेक मुसलमानों को कष्टदायक तरीकों से मार डाला और लगभग तेरह वर्षों तक यही अत्याचार चलता रहा। खुदा के सच्चे बंदों को बेरहमी से टुकड़े-टुकड़े किया गया, बच्चों और महिलाओं को मार डाला गया।

फिर भी खुदा तआला की ओर से आदेश था कि बुराई का प्रतिकार न करो। अतः उन सच्चे लोगों ने धैर्य रखा। उनके रक्त से गलियाँ लाल हो गईं, फिर भी उन्होंने शिकायत नहीं की। वे कुर्बानी की तरह काटे गए, फिर भी उन्होंने आह तक नहीं की।"

(गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 17, पृष्ठ 4–5)

कुफ्फार-ए-मक्का ने आपको तौहीद का संदेश फैलाने से रोकने के लिए डराया भी और लालच भी दिया, लेकिन आपका यही उत्तर था कि यही मेरी ज़िंदगी का उद्देश्य है कि तौहीद को दुनिया में स्थापित करूँ, और इसी उद्देश्य के लिए खुदा तआला ने मुझे भेजा है।

इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक स्थान पर लिखा है:

"जब विरोध तेज़ हो गया और इधर रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम मक्का वालों को ज़ोर देकर खुदा तआला का यह संदेश पहुँचाने लगे कि इस दुनिया का बनाने वाला खुदा एक ही है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। जितने भी नबी आए हैं, सबने उसी की एकता को स्वीकार किया और अपनी क़ौमों को भी इसी शिक्षा की ओर बुलाया।

तुम एक खुदा पर ईमान लाओ, इन पत्थर के बुतों को छोड़ दो, क्योंकि ये बिल्कुल बेकार हैं और इनमें कोई शक्ति नहीं। ऐ मक्का वालों! क्या तुम नहीं देखते कि इनके सामने जो चढ़ावा रखा जाता है, अगर उस पर मक्खियाँ बैठ जाएँ तो ये उन्हें भी नहीं हटा सकते। अगर कोई इन पर हमला करे तो ये अपनी रक्षा नहीं कर सकते। अगर कोई इनसे प्रश्न करे तो ये उत्तर नहीं दे सकते। अगर कोई इनसे सहायता माँगे तो ये उसकी मदद नहीं कर सकते।

लेकिन एक खुदा ऐसा है जो माँगने वालों की आवश्यकता पूरी करता है, प्रश्न करने वालों को उत्तर देता है, सहायता माँगने वालों की सहायता करता है, अपने शत्रुओं को परास्त करता है और अपने उपासक बंदों को ऊँची तरक्कियाँ देता है। उसी से वह प्रकाश मिलता है जो उसके भक्तों के दिलों को उजाला कर देता है।

फिर तुम क्यों ऐसे खुदा को छोड़कर निर्जीव बुतों के आगे झुकते हो और अपनी ज़िंदगी व्यर्थ कर रहे हो? क्या तुम नहीं देखते कि खुदा तआला की तौहीद को छोड़कर तुम्हारे विचार भी गंदे हो गए हैं और दिल भी अंधेरे हो गए हैं? तुम तरह-तरह की वहमी शिक्षाओं में फँस गए हो। हलाल और हराम में तुम्हें फर्क नहीं रहा। अच्छे और बुरे में भेद नहीं कर सकते।

तुम अपनी माताओं का अपमान करते हो, अपनी बहनों और बेटियों पर अत्याचार करते हो और उनके अधिकार नहीं देते। अपनी पत्नियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते। अनाथों का हक मारते हो और विधवाओं के साथ बुरा व्यवहार करते हो। गरीबों और कमजोरों पर अत्याचार करते हो और दूसरों का हक मारकर अपनी बड़ाई कायम करना चाहते हो। झूठ और धोखे से तुम्हें शर्म नहीं, चोरी और डकैती से तुम्हें घृणा नहीं। जुआ और शराब तुम्हारा शौक बन गए हैं। ज्ञान प्राप्त करने और समाज की सेवा की ओर तुम्हारा ध्यान नहीं।

तुम कब तक एक खुदा से गाफिल रहोगे? आओ, अपनी सुधार करो और अत्याचार छोड़ दो।"

ये बुराइयाँ तुम्हारे अंदर पैदा हो गई हैं, इनकी सुधार करो।

आज भी जिन लोगों में ये बुराइयाँ पाई जाती हैं, वे तौहीद से दूर होने के कारण ही हैं। जिन क़ौमों में ये दोष हैं, वहाँ यदि एक-दो अच्छाइयाँ हों भी, तो भी इन बुराइयों में से बहुत सी उनमें पाई जाती हैं, और इसका कारण यही है कि वे तौहीद से दूर हैं। दुर्भाग्य से कुछ मुसलमानों की भी यही स्थिति है।

फिर आपने फरमाया कि खुदा का निकटता पाने का तरीका यह है कि "हर हक़दार को उसका हक़ दो।" यह बहुत आवश्यक बात है। "अगर खुदा ने धन दिया है तो उसे देश और समाज की सेवा तथा गरीबों और कमजोरों की उन्नति में खर्च करो। महिलाओं का सम्मान करो और उनके अधिकार पूरे करो। अनाथों को खुदा की अमानत समझो और उनकी देखभाल को बड़ी नेकी समझो। विधवाओं का सहारा बनो।

नेकी और परहेज़गारी को स्थापित करो। न्याय ही नहीं, बल्कि दया और उपकार को भी अपना स्वभाव बनाओ। इस दुनिया में तुम्हारा आना व्यर्थ न जाए। अपने पीछे अच्छे कार्य छोड़कर जाओ ताकि स्थायी भलाई का बीज बोया जाए। असली सम्मान केवल अधिकार लेने में नहीं, बल्कि त्याग और बलिदान में है।

इसलिए तुम बलिदान करो और खुदा के करीब हो जाओ। खुदा के बंदों के सामने त्याग का उदाहरण प्रस्तुत करो, ताकि खुदा तआला के यहाँ तुम्हारा अधिकार स्थापित हो।"

ये वे निशानियाँ हैं जो सच्ची तौहीद पर चलने वाले में पाई जाती हैं। "निस्संदेह हम कमज़ोर हैं, लेकिन हमारी कमज़ोरी को मत देखो। आकाश में सत्य की सरकार का निर्णय हो चुका है। अब मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

अलैहि व सल्लम के माध्यम से न्याय का तराजू स्थापित किया जाएगा और न्याय तथा दया की सरकार कायम होगी, जिसमें किसी पर अत्याचार नहीं होगा।

धर्म के मामले में ज़बरदस्ती नहीं होगी। महिलाओं और गुलामों पर जो अत्याचार होते रहे हैं, वे समाप्त कर दिए जाएँगे और शैतान की सत्ता के स्थान पर एक खुदा की सत्ता स्थापित की जाएगी।"

जब ये शिक्षाएँ बार-बार मक्का वालों को सुनाई जाने लगीं और अच्छे स्वभाव के लोगों की रुचि इस्लाम की ओर बढ़ने लगी, तो एक दिन मक्का के सरदार इकट्ठे होकर आपके चाचा अबू तालिब के पास आए और उनसे कहा—आप हमारे प्रमुख हैं और आपकी इज़्ज़त की वजह से हमने आपके भतीजे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कुछ नहीं कहा।

अब समय आ गया है कि हम अंतिम निर्णय करें। या तो आप उसे समझाएँ और उससे पूछें कि वह हमसे क्या चाहता है। यदि वह सम्मान चाहता है, तो हम उसे अपना नेता बना देंगे। यदि वह धन चाहता है, तो हम सब मिलकर उसे धन देंगे। यदि उसे विवाह की इच्छा है, तो मक्का की कोई भी लड़की जिसे वह पसंद करे, हम उसका विवाह उससे करा देंगे।

हम इसके बदले उससे कुछ नहीं चाहते, केवल इतना चाहते हैं कि वह हमारे बुतों को बुरा कहना छोड़ दे। वह चाहे कहे कि खुदा एक है, लेकिन हमारे बुतों को बुरा न कहे। अगर वह इतना मान ले, तो हमारा उससे समझौता हो जाएगा।"

फिर उन्होंने कहा—यदि वह नहीं मानता, तो या तो आपको अपने भतीजे को छोड़ना होगा या आपकी क़ौम आपको छोड़ देगी।

अबू तालिब के लिए यह बात बहुत कठिन थी। उन्होंने रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुलाया और सारी बात बताई। उनकी आँखों में आँसू आ गए। यह देखकर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखों में भी आँसू आ गए और आपने फरमाया:

"ऐ मेरे चाचा! मैं यह नहीं कहता कि आप अपनी क़ौम को छोड़ दें और मेरा साथ दें। आप चाहें तो मेरा साथ छोड़ दें और अपनी क़ौम के साथ मिल जाएँ। लेकिन मुझे एक खुदा की क़सम है कि यदि वे मेरे दाएँ हाथ में सूरज और बाएँ हाथ में चाँद रख दें, तब भी मैं खुदा तआला की तौहीद का प्रचार छोड़ नहीं सकता। मैं अपना काम करता रहूँगा, जब तक खुदा मुझे मृत्यु न दे।"

यह ईमान और सच्चाई से भरा उत्तर अबू तालिब की आँखें खोलने के लिए पर्याप्त था। उन्होंने कहा—ऐ मेरे भतीजे! जाओ, अपना कर्तव्य निभाते रहो। अगर क़ौम मुझे छोड़ना चाहती है, तो छोड़ दे, लेकिन मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 199–202)

तौहीद की स्थापना के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का के काफ़िरों की ओर से हर प्रकार के अत्याचार सहन किए और यही भावना आपने अपने सहाबा में भी पैदा की, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी लिखा है।

उन्होंने अपनी गर्दनें कटवाईं, "अहद, अहद" (एक ही खुदा है) का नारा लगाते हुए अत्याचार सहा और अपनी जानें कुर्बान कर दीं।

(अत्तबक़ातुल कुबरा, इब्न सअद, भाग 3, पृष्ठ 175 "बिलाल बिन रबाह", भाग 8, पृष्ठ 207 "सुमैया बिन्त ख़य्यात", दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

मक्का के काफ़िरों की सारी बुराइयाँ, जिनका उल्लेख हुआ, तौहीद से दूरी और शिर्क के कारण थीं। आज भी जिन लोगों और क़ौमों में ये बुराइयाँ पाई जाती हैं, वे इसी कारण से हैं।

अतः ऐसे समय में हमारा कर्तव्य है कि हम तौहीद का संदेश फैलाते रहें और जहाँ भी इसे पहुँचाएँ, वहाँ अपने आध्यात्मिक और नैतिक जीवन में भी स्पष्ट परिवर्तन लाने की कोशिश करें। तभी हम सच्चे तौहीद को मानने वाले और खुदा तआला के आदेशों पर चलने वाले कहलाएँगे।

खुदा तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे।

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल, 20 मार्च 2026, पृष्ठ 2–7)

★ ★ ★

पृष्ठ 11 का शेष

(स.अ.व.) की शिक्षा की सच्चाई से प्रभावित हुए और यहूदियों से सुनी हुई भविष्यवाणियाँ उनके ईमान लाने में सहायक हुईं। अतः अगले वर्ष हज के अवसर पर मदीना के लोग पुनः आए। इस बार मदीना से बारह लोग इस इरादे के साथ चले कि वह मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के धर्म में सम्मिलित हो जाएँगे। उनमें से दस 'ख़ज़रज' क़बीले के थे और दो 'औस' के। वे आप[स.] से मिना में मिले और उन्होंने आप के हाथ पर इस बात का प्रण किया कि वे ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य किसी की उपासना नहीं करेंगे, वे चोरी नहीं करेंगे, वे व्यभिचार नहीं करेंगे, वे अपनी लड़कियों की हत्या नहीं करेंगे, वे एक दूसरे पर झूठे आरोप नहीं लगाएँगे, न वे ख़ुदा के नबी की अन्य शुभ शिक्षाओं की अवज्ञा करेंगे। ये लोग वापस गए तो उन्होंने अपनी जाति में और भी जोश के साथ प्रचार आरम्भ कर दिया[1]। मदीना के घरों से मूर्तियाँ निकाल कर बाहर फेंकी जाने लगीं, मूर्तियों के आगे नतमस्तक होने वाले लोग अब ख़ुदा के अतिरिक्त किसी के सामने झुकने के लिए तैयार न थे और इस पर वे गर्व अनुभव कर रहे थे कि सदियों की मित्रता और सदियों के प्रचार से जो परिवर्तन वे न कर सके, इस्लाम ने वह परिवर्तन कुछ ही दिनों में कर दिया। एकेश्वरवाद का उपदेश मदीना-निवासियों के हृदयों में घर करता जाता था। एक के बाद एक लोग आते और मुसलमानों से कहते, हमें अपने धर्म की शिक्षा दो, परन्तु मदीने के नवदीक्षित मुस्लिम न तो स्वयं इस्लामी शिक्षा से पूर्णतया परिचित थे और न उनकी संख्या इतनी थी कि वे सैकड़ों और हज़ारों लोगों को इस्लाम के संबंध में विस्तारपूर्वक बता सकें। इसलिए उन्होंने मक्का में एक व्यक्ति भेज कर प्रचारक भेजने का निवेदन किया। रसूले करीम (स.अ.व.) ने मुसअब[रज़ि.] नामक एक सहाबी को जो हबशा के प्रवास से वापस आए थे मदीना में प्रचार के लिए भिजवाया। मुसअब[रज़ि.] मक्का के बाहर पहले इस्लामी प्रचारक थे।

इसरा (रात की स्वप्निल यात्रा)

इन्हीं दिनों ख़ुदा तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को आने वाले समय के संबंध में एक अन्य भविष्यवाणी का महान शुभ सन्देश सुनाया। आप को एक कश्फ़ (अर्ध निद्रावस्था) में दिखाया गया कि आप यरुश्लम गए हैं और नबियों ने आपकी अगवाई में नमाज़ पढ़ी है[1]। यरुश्लम की व्याख्या मदीना थी जो भविष्य के लिए एक ख़ुदा की उपासना का केन्द्र बनने वाला था और आपके पीछे नबियों के नमाज़ पढ़ने की व्याख्या यह थी कि भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग आप के धर्म में सम्मिलित होंगे और आप का धर्म सार्वभौमिक हो जाएगा। यह समय मक्का के मुसलमानों के लिए नितान्त कठिन था और कष्ट चरम सीमा को पहुँच चुके थे। इस कश्फ़ का सुनाना मक्का वालों के लिए हँसी और उपहास का एक नया कारण बन गया तथा उन्होंने प्रत्येक सभा में आप[स.] के इस कश्फ़ पर उपहास करना आरम्भ किया परन्तु कौन जानता था कि नवीन यरुश्लम का निर्माण आरम्भ था। पूरब और पश्चिम की जातियां कान लगाए ख़ुदा के अन्तिम नबी की आवाज़ सुनने के लिए तत्पर खड़ी थीं।

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

अपने काव्य में आपने फ़रमाया:

अब छोड़ दो जिहाद का ऐ दोस्तों ख़याल
दीं के लिए हराम है अब जंग और किताल
फ़रमा चुका है सैय्यद-ए-कौनैन मुस्तफ़ा
ईसा मसीह कर देगा जंगों का खात्मा
यह हुक्म सुनकर भी जो लड़ाई को जाएगा
वह काफ़िरों से सख्त हजीमत उठाएगा

(तौहफ़ा गोलड़िया, पृष्ठ 40)

अब निर्णय हम पाठकों पर छोड़ते हैं कि वे स्वयं विचार करें कि 1900 ई० के बाद, जब सच्चे इमाम महदी व मसीह मऊऊद हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने तलवार के जिहाद के समाप्त होने का फ़तवा दिया, क्या उसके बाद किसी भी युद्ध में, जो जिहाद के नाम पर लड़ा गया, मुसलमानों को सफलता मिली? या ये युद्ध मुसलमानों ने मुसलमानों के विरुद्ध ही लड़े, एक-दूसरे का खून बहाया, इस्लाम को बदनाम किया और मुसलमानों को कमजोर किया? विचार करो और सोचो!

काश! मुसलमान खुदा की ओर से आने वाले इस सच्चे मसीह मऊऊद की दर्दभरी आवाज़ को सुन लेते, तो आज दुनिया में मुसलमान, मुसलमान का खून न बहाता और उनकी शक्ति अच्छे कार्यों में लगती।

अतः आइए, "हुक्म व अद्ल" के इन निर्णयों की ओर ध्यान दें। कुछ और निर्णयों का वर्णन अगली कड़ी में किया जाएगा। व बिल्लाह तौफ़ीक।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

इस आयत से स्पष्ट है कि जिस तरह बनी इस्राईल के लिए दो तबाहियों की खबर इस सूरत के शुरू में दी गई थी, वैसी ही खबर मुसलमानों के लिए भी दी गई है, क्योंकि मुसलमानों को बनी इस्राईल का समान बताया गया है, जैसे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का समान बताया गया है।

इसका प्रमाण यह है कि सूरत के आरंभ में दो वादों का ज़िक्र है और दोनों अज़ाब के वादे हैं। एक बख्त-नस्र (बाबुल के राजा) के हाथों पूरा हुआ और दूसरा टाइटस (रोम के राजा) के हाथों पूरा हुआ (देखो रुकू पहला)। इन दोनों वादों में बनी इस्राईल को इकट्ठा करने का ज़िक्र नहीं, बल्कि उन्हें बिखेरने का ज़िक्र है। इसके विपरीत इस आयत में बताया गया है कि दूसरे वादे के समय बनी इस्राईल को फिर पवित्र भूमि में लाया जाएगा।

इससे पता चलता है कि यह दूसरा वादा अलग प्रकार का है और इससे यह भी मालूम होता है कि इसके साथ एक पहला वादा भी है। अब जब हम विचार करते हैं, तो इन दोनों वादों का ज़िक्र क़ुरआन करीम में इस तरह मिलता है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत मूसा का समान बताया गया है, और सूरह फातिहा में मुसलमानों के एक हिस्से के बारे में यह खबर दी गई है कि वे अहले किताब के मार्ग पर चलेंगे।

इन दोनों बातों को मिलाकर यह निष्कर्ष निकलता है कि बनी इस्राईल की तरह मुसलमानों के लिए भी दो अज़ाब के वादे किए गए हैं। और यहां "वअदुल-आख़िरह" से मुराद मुसलमानों के दूसरे अज़ाब का वादा है।

बताया यह गया है कि जब मुसलमानों पर यह दूसरा अज़ाब आएगा, और पवित्र भूमि कुछ समय के लिए उनके हाथ से निकल जाएगी, तो उस समय अल्लाह तआला फिर उन्हें इस देश में वापस लाएगा।

चुनांचे देख लो, इसी तरह घटना घटी है। जिस तरह बख्त-नस्र के समय पहली बार पवित्र भूमि यहूदियों के हाथ से निकली, उसी तरह सलीबी युद्धों के समय मुसलमानों के हाथ से निकली (दि न्यू एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, शब्द "Crusade")।

फिर जिस तरह हज़रत मूसा के लगभग तेरह सौ साल बाद हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के सलीब के घटना के बाद, जब वे मानो उस देश के लोगों के लिए मर गए थे, बनी इस्राईल को पवित्र भूमि से फिर निकाल दिया गया, उसी तरह इस समय, जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफात के बाद लगभग उतना ही समय बीत चुका है, मुसलमानों की हुकूमत भी पवित्र भूमि से समाप्त हो गई।

और जैसा कि क़ुरआन करीम ने बताया था, मुसलमानों का यह दूसरा अज़ाब यहूदियों के लिए पवित्र भूमि में वापस आने का साधन बन गया है।

इसके अतिरिक्त हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह अल-अंबिया आयत 107

إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ عَابِدِينَ

की तफ़सीर में फ़रमाते हैं:

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमने ज़बूर में कुछ शर्तें बयान करने के बाद यह लिख दिया था कि पवित्र भूमि के वारिस हमारे नेक बंदे होंगे। इसमें इबादत करने वाले लोगों के लिए एक संदेश है, और हमने तुम्हें सारी दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा है।

अर्थ यह है कि बाइबल में जो यह भविष्यवाणी थी कि केवल खुदा के नेक बंदे ही पवित्र भूमि में रहेंगे, उससे कोई उस समय धोखा न खाए जब बनी इस्राईल उस देश पर हावी हो जाएं। क्योंकि इस भविष्यवाणी में यह संकेत भी था कि यदि कुछ समय का अंतर आएगा, तो फिर खुदा के बंदे उस देश पर हावी हो जाएंगे।

इसलिए फरमाया कि इबादत करने वालों के लिए इसमें एक संदेश है, यानी मुसलमानों को सावधान कर दो कि एक समय ऐसा आएगा जब बनी इस्राईल फिर उस पर काबिज़ हो जाएंगे। इसलिए यहां "आबिदीन" शब्द दाऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी की ओर संकेत करने के लिए इस्तेमाल किया गया है और बताया गया कि मेरे बंदों से कह दो कि सावधान हो जाओ।

यदि किसी समय तुमने मेरे सच्चे बंदे बनने में कमजोरी दिखाई, तो अल्लाह तआला यहूदियों को इस देश में वापस ले आएगा। लेकिन मुसलमानों को चाहिए कि वे फिर से इबादत करने वाले बन जाएं। इसके परिणामस्वरूप वे फिर से हावी हो जाएंगे।

और उन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हर युग के लिए रहमत हैं। उनका समय उस समय समाप्त नहीं हो जाता जब बनी इस्राईल फिलिस्तीन पर काबिज़ हो जाएं, बल्कि उसके बाद भी उनका रहमत वाला दौर जारी रहता है।

इसलिए निराश नहीं होना चाहिए। जब दोबारा खुदा की रहमत जोश में आएगी, तो मुसलमान फिर से फिलिस्तीन में प्रभावी हो जाएंगे।

(तफ़सीर कबीर, जिल्द चतुर्थ, सूरह बनी इस्राईल, आयत 105)
(तफ़सीर कबीर, जिल्द पंचम, सूरह अल-अंबिया, आयत 106)

★ ★ ★

ड्राइवर पद के लिए घोषणा
सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

शर्तें

(1) उम्मीदवार की आयु 18 वर्ष से अधिक और 40 वर्ष से कम हो।

(2) उम्मीदवार कम से कम दसवीं पास हो।

(3) उम्मीदवार के पास चार पहिया वाहन चलाने का वैध लाइसेंस होना अनिवार्य है।

(4) उम्मीदवार के लिए आवश्यक होगा कि उसके पास किसी सरकारी या निजी संस्था में ड्राइविंग का कम से कम 2 वर्ष का अनुभव हो। साथ ही अपनी आवेदन-पत्र के साथ उस संस्था का अनुभव प्रमाण-पत्र (एक्सपीरियंस सर्टिफिकेट) प्रस्तुत करना भी अनिवार्य है, जहाँ से उम्मीदवार ने अनुभव प्राप्त किया है।

(5) उम्मीदवार के लिए अपना जन्म प्रमाण-पत्र जमा करना आवश्यक है।

(6) उम्मीदवार के लिए लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होना अनिवार्य होगा।

(7) लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होने वाले उम्मीदवारों का ड्राइविंग परीक्षण भी लिया जाएगा।

(8) उम्मीदवार के लिए आवश्यक होगा कि वह नूर अस्पताल क़ादियान से प्राप्त चिकित्सकीय फिटनेस प्रमाण-पत्र के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त हो।

(9) उम्मीदवार ड्राइवर को नियुक्ति के बाद द्वितीय श्रेणी के बराबर भत्ता और अन्य सुविधाएँ दी जाएँगी।

(10) चयन होने की स्थिति में उम्मीदवारों को क़ादियान में प्रारंभिक पाँच वर्षों तक अपने निवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

(11) उम्मीदवार के आने-जाने का यात्रा खर्च स्वयं वहन करना होगा।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

मुसलमानों का सामाजिक बहिष्कार

निष्कर्ष यह कि अत्याचार अब सीमा से बाहर होते जा रहे थे। कुछ लोग मक्का से पलायन कर चुके थे और जो शेष थे वे पहले से भी अधिक अत्याचारों का शिकार होने लगे थे, परन्तु अत्याचारियों के हृदय अभी शान्त न हुए थे। जब उन्होंने देखा कि हमारे पहले अत्याचारों से मुसलमानों के हृदय नहीं टूटे, उनके ईमानों में डगमगाहट पैदा नहीं हुई अपितु वे एक ख़ुदा की उपासना में और भी अधिक बढ़ गए और बढ़ते चले जा रहे हैं तथा मूर्तियों से उनकी घृणा उन्नति करती जा रही है तो उन्होंने एक परामर्श समिति का गठन किया और यह निर्णय कर दिया कि मुसलमानों का पूर्णतया बहिष्कार किया जाए। कोई व्यक्ति उनके किसी प्रकार के सौदे का क्रय-विक्रय न करे और न ही किसी प्रकार के लेन-देन का संबंध रखे। उस समय मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) कुछ अनुयायियों और उनके परिवार के लोगों सहित और कुछ ऐसे परिजनों के साथ जो मुसलमान न होने के बावजूद आप[स.] का साथ छोड़ने के लिए तैयार न थे, एक पृथक स्थान में जो अबू तालिब के अधिकार में था शरण लेने पर विवश हुए[1]। उन लोगों के पास जीवन-यापन की सामग्री का कोई भण्डार अथवा धन-दौलत कुछ भी न था जिसके सहारे वे जीवित रहते। वे इस दरिद्रता के समय में जिन परिस्थितियों से गुज़रे होंगे अन्य मनुष्य के लिए उनका अनुमान लगाना संभव नहीं। लगभग तीन वर्ष तक ये परिस्थितियां यथावत् रहीं और मक्का के कथित बहिष्कार के निर्णय में कोई ढील न दी गई। लगभग तीन वर्ष के पश्चात मक्का के पाँच सभ्य लोगों के हृदय में इस अत्याचार के विरुद्ध भावना पैदा हुई। वे शा'ब अबी तालिब के द्वार पर गए और उन घेराबन्द लोगों को आवाज़ देकर कहा कि वे बाहर निकलें और यह कि वे इस प्रतिज्ञा-पत्र को भंग करने के लिए बिल्कुल तैयार हैं। अबू तालिब जो इस लम्बी घेराबन्दी और निराहार रहने के कारण बहुत कमज़ोर हो रहे थे बाहर आए और अपनी जाति को सम्बोधित करके भर्त्सना की कि उनकी यह लम्बी घेराबन्दी किस प्रकार उचित हो सकती है। उन पाँच सभ्य लोगों का द्रोह तुरन्त बिजली की भांति नगर में फैल गया। मानवता ने फिर सर उठाना आरम्भ किया, नेकी की भावना ने पुनः एक बार साँस ली और मक्का के लोग इस शैतानी निर्णय को भंग करने पर विवश हो गए। निर्णय तो समाप्त हो गया, परन्तु तीन वर्षीय निराहार रहने ने अपना प्रभाव दिखाना आरम्भ किया। थोड़े ही दिनों में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की वफ़ादार पत्नी हज़रत ख़दीजा[रज़ि.] का इन बहिष्कार के दिनों में कष्टों के परिणामस्वरूप स्वर्गवास हो गया और उसके एक माह पश्चात् अबू तालिब भी इस संसार से परलोक सिधार गए।

हज़रत ख़दीजा और अबू तालिब के मृत्योपरान्त प्रचार में बाधाएँ और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तायफ़-यात्रा

मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) और आप के सहाबा अब अबूतालिब के परस्पर मेल-मिलाप रखने वाले प्रभाव से वंचित हो गए तथा मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की पारिवारिक जीवन-संगिनी हज़रत ख़दीजा[रज़ि.] भी आप को वियोगग्रस्त छोड़ गईं। इन दोनों के निधन से उन लोगों की सहानुभूति भी आप और आपके सहाबा[रज़ि.] से स्वाभाविक तौर पर कम हो गई जो उन के संबंधों के कारण अत्याचारियों को अत्याचार से रोकते रहते थे। अबू-तालिब के निधन के ताज़ा आघात के कारण, अबूतालिब की वसीयत के अनुसार आप के कट्टर शत्रु अबू तालिब के छोटे भाई अबूलहब ने कुछ दिन आपका साथ दिया परन्तु जब मक्का वालों ने उसकी भावनाओं को यह कहकर उत्तेजित किया कि मुहम्मद (स.अ.व.) तो उन समस्त लोगों को जो एकेश्वरवाद को स्वीकार नहीं करते अपराधी और दण्डनीय समझता है। अतः अपने पूर्वजों के लिए स्वाभिमान के जोश में अबू लहब ने आपका साथ छोड़ दिया और प्रण किया कि वह भविष्य में पहले से भी बढ़कर आप का विरोध करने पर कटिबद्ध रहेगा। घेराबन्दी में जीवन गुज़ारने के कारण चूंकि तीन वर्ष तक लोग अपने परिजनों से पृथक रहे थे इस लिए संबंधों में शिथिलता आ गई थी। मक्का वाले मुसलमानों से बोलचाल समाप्त करने के अभ्यस्त हो चुके थे, इसलिए प्रचार का मैदान सीमित हो गया था। रसूले करीम (स.अ.व.) ने जब यह दशा देखी तो आप ने निर्णय किया कि वे मक्का के स्थान पर तायफ़ के लोगों के पास जाकर उन्हें इस्लाम का निमन्त्रण दें। आप[स.] यह विचार ही कर रहे थे कि मक्का वालों के विरोध ने इस इरादे को और भी दृढ़ कर दिया। प्रथम तो मक्का वाले बात सुनते ही नहीं थे दूसरे अब उन्होंने यह दिनचर्या बना ली कि मुहम्मद (स.अ.व.) को गलियों में चलने ही न दें। जब आप बाहर निकलते, आप के सर पर मिट्टी फेंकी जाती ताकि आप लोगों से मिल ही न सकें। एक बार इसी अवस्था में वापस लौटे तो आपकी एक बेटी आपके सर से मिट्टी झाड़ते हुए रोने लगी। आप (स.अ.व.) ने फ़रमाया— हे मेरी बेटी ! मत रो, क्योंकि ख़ुदा निःसंदेह तुम्हारे पिता के साथ है[1]। आप कष्टों से नहीं घबराते थे परन्तु कठिनाई यह थी कि लोग बात सुनने के लिए तैयार न थे। जहाँ तक कष्टों का प्रश्न है आप उन्हें आवश्यक समझते थे अपितु आप के लिए सर्वाधिक कष्ट का दिन तो वह होता था जब कोई व्यक्ति आप को कष्ट नहीं देता था। लिखा है कि एक दिन मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) मक्का की गलियों में प्रचार के लिए निकले, परन्तु उस दिन किसी योजनानुसार किसी एक व्यक्ति ने भी आप से बात न की और न आप को किसी प्रकार का कोई कष्ट दिया, न किसी दास ने न किसी आज़ाद ने। अतः नबी करीम (स.अ.व.) इस आघात और मनस्ताप से ख़ामोशी के साथ लेट गए, यहाँ तक कि ख़ुदा तआला ने आपको सांत्वना दी और फ़रमाया— जाओ और अपनी जाति को पुनः, पुनः और पुनः सावधान करो तथा उनकी लापरवाही पर ध्यान न दो। अतः रसूले करीम (स.अ.व.) को यह बात बुरी नहीं लगती थी कि लोग आपको कष्ट देते थे, परन्तु ख़ुदा का नबी जो संसार का मार्ग-दर्शन करने के लिए भेजा गया था। वह इस बात को कब सहन कर सकता था कि लोग उस से बात ही न करें तथा उसकी बात सुनने के लिए तैयार ही न हों। ऐसा निरर्थक जीवन उसके लिए सर्वाधिक कष्टप्रद था। अतः आप[स.] ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब आप तायफ़ की ओर जाएँगे और तायफ़ के लोगों को ख़ुदा तआला का सन्देश पहुँचाएँगे तथा ख़ुदा तआला के नबियों के लिए यही अभीष्ट होता है कि वे इधर से उधर

भिन्न-भिन्न जातियों को सम्बोधित करते फिरें। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ भी ऐसा ही हुआ। कभी वह फिरऔन की जाति को सम्बोधन करते तो कभी इस्हाक़ की जाति को और कभी मदयन के लोगों को। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को भी प्रचार की रुचि में कभी जलील के लोगों को सम्बोधित करना पड़ता और कभी यरदुन पार के लोगों को, कभी यरुश्लम के लोगों और कभी अन्य लोगों को सम्बोधित करना पड़ा। जब मक्का के लोगों ने बातें सुनने से ही इन्कार कर दिया और यह निर्णय कर लिया कि मारो-पीटो परन्तु बात बिल्कुल न सुनो तो आप ने तायफ़ की ओर ध्यान दिया। तायफ़ मक्का से लगभग साठ मील की दूरी पर दक्षिण-पूरब में एक नगर है, जो अपने फलों और अपनी खेती के कारण प्रसिद्ध है। यह शहर मूर्ति-पूजा में मक्का वालों से कुछ कम न था। का'बा में रखी मूर्तियों के अतिरिक्त 'लात' नामक एक प्रसिद्ध मूर्ति तायफ़ की ख्याति का कारण थी। जिसके दर्शनार्थ अरब के लोग दूर-दूर से आते थे। तायफ़ के लोगों की मक्का में बहुत सी रिश्तेदारियाँ भी थीं तथा तायफ़ और मक्का के मध्य कई हरे-भरे स्थानों में मक्का वालों की सम्पत्तियाँ (जायदादें) भी थीं। जब आप तायफ़ पहुँचे तो वहाँ के सरदार आप से मिलने के लिए आने लगे, परन्तु कोई व्यक्ति सत्य को स्वीकार करने कि लिए तैयार न हुआ। जनसाधारण ने भी अपने सरदारों का अनुसरण किया तथा ख़ुदा के सन्देश को तिरस्कार की दृष्टि से देखा भौतिक वादियों की दृष्टि से देखा। भौतिक वादियों की दृष्टि में साधन तथा निस्सहाय नबी तिरस्कृत ही हुआ करते हैं। वे सांसारिक लोग तो शस्त्रों और सेनाओं की आवाज़ को ही सुनना जानते हैं। आप के संबंध में बातें तो पहुँच ही चुकी थीं। जब आप तायफ़ पहुँचे और वहाँ के लोगों ने देखा कि आप के साथ कोई सेना या दल होता ! इसके स्थान पर आप (स.अ.व.) केवल ज़ैद के साथ तायफ़ के प्रसिद्ध क्षेत्रों में प्रचार करते फिरते हैं तो हृदय के अन्धों ने अपने सामने ख़ुदा का नबी नहीं अपितु एक तिरस्कृत और हीन व्यक्ति पाया और समझे कि कदाचित् इसे सताना और कष्ट पहुँचाना जाति के सरदारों की दृष्टि में हमें सम्मानित कर देगा। वे एक दिन एकत्र हुए और अपने साथ कुत्ते लिए, लड़कों को उकसाया तथा अपनी झोलियाँ पत्थरों से भर लीं और बड़ी निर्दयता से रसूले करीम (स.अ.व.) पर पथराव आरम्भ किया, वे रसूले करीम (स.अ.व.) को शहर से ढकेलते हुए बाहर ले गए। आप के पैर लहू-लुहान हो गए तथा ज़ैद आप को बचाते-बचाते बहुत घायल हो गए, परन्तु अत्याचारियों का हृदय शान्त न हुआ, वे आप के पीछे चलते गए, चलते गए यहाँ तक कि आप शहर से कई मील दूर की पहाड़ियों तक पहुँच गए। उन्होंने आप का पीछा न छोड़ा। जब ये लोग आप का पीछा कर रहे थे तो आप इस भय से कि ख़ुदा का आक्रोश उन पर न भड़क उठे आकाश की ओर दृष्टि उठा कर देखते और नितान्त आर्द्रतापूर्वक दुआ करते। हे मेरे ख़ुदा ! इन लोगों को क्षमा कर कि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं। घायल, थके हुए तथा लोगों की ओर से तिरस्कृत आप ने एक अंगूरिस्तान की छाया में शरण ली यह अंगूरिस्तान मक्का के दो सरदारों का था। यह सरदार उस समय अंगूरिस्तान में थे जो पुराने और कट्टर शत्रु जिन्होंने दस वर्ष तक आप के विरोध में अपना जीवन व्यतीत किया था, कदाचित् उस समय इस बात से प्रभावित हो गए कि एक मक्का के व्यक्ति को तायफ़ के लोगों ने घायल किया है या शायद वे क्षण ऐसे क्षण थे जब उनके हृदयों में नेकी की भावना जाग उठी थी, उन्होंने अंगूरों का एक थाल भरा और अपने दास 'अदास' को कहा कि जाओ उन यात्रियों को दो। 'अदास' नैनवा का रहने वाला एक ईसाई था। जब उसने यह अंगूर मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के सामने प्रस्तुत किए और आप ने उन अंगूरों को यह कहते हुए लिया कि ख़ुदा के नाम पर जो नितान्त कृपा करने वाला और बारम्बार दया करने वाला है मैं यह लेता हूँ तो उसके हृदय में ईसाइयत की याद पुनः ताज़ा हो गई। उसने महसूस किया कि उसके सामने ख़ुदा का एक नबी बैठा है जो इस्राईली नबियों की सी भाषा में बातें करता है। उससे रसूले करीम (स.अ.व.) ने पूछा— तुम कहाँ के रहने वाले हो? जब उसने कहा नैनवा का। तो आपने फ़रमाया— वह नेक मनुष्य यूनुस[अ.] जो मती का पुत्र था और नैनवा का निवासी, वह मेरी तरह ख़ुदा का नबी था। फिर आप ने उसे अपने धर्म के बारे में समझाया। अदास की हैरानी कुछ ही क्षणों में आश्चर्य में परिवर्तित हो गई। आश्चर्य ईमान में परिवर्तित हो गया और कुछ ही क्षणों में वह अजनबी दास आँसुओं से भरी आँखों के साथ मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) से लिपट गया तथा आपके हाथों और चरणों को चूमने लगा। अदास की बातों से निवृत हो कर आप[स.] ने अल्लाह तआला की ओर ध्यानमग्न होकर ख़ुदा से यह दुआ मांगी —

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَشْكُوْ ضُعْفَ قُوَّتِيْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِيْ وَهَوَانِيْ عَلَى النَّاسِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَاَنْتَ رَبِّيْ اِلٰى مَنْ تَكِلُنِيْ اِلٰى بَعِيْدٍ يَتَجَهَّمُنِيْ اَمْ اِلٰى عَدُوٍّ مَلَّكْتَهٗ اَمْرِيْ اِنْ لَمْ يَكُنْ بِكَ عَلَيَّ غَضَبٌ فَلَا اُبَالِيْ وَلٰكِنْ عَافِيَتُكَ هِيَ اَوْسَعُ لِيْ اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِيْ اَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَصَلَحَ عَلَيْهِ اَمْرُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ مِنْ اَنْ تُنَزِّلَ بِيْ غَضَبَكَ اَوْ يَحُلَّ عَلَيَّ سَخَطُكَ لَكَ الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ۔

अर्थात् हे मेरे अल्लाह! मैं अपने साधनों की कमी, लोगों द्वारा तिरस्कृत होने, निरुपाय की दयनीय अवस्था की गुहार तुझ से ही करता हूँ। तू असहायों और दुर्बलों का सहायक है। तू मेरा भी रब्ब है। तू मुझे किस प्रकार के हाथों में छोड़ देगा! क्या अजनबी लोगों के हाथों में जो मुझे इधर-उधर ढ़केलते फिरेंगे अथवा उस शत्रु के हाथ में जो मेरे देश पर क़ब्ज़ा कर चुका है। यदि तू मुझ से कुपित नहीं तो मुझे इन शत्रुओं की तनिक भी परवाह नहीं। जो मुझ पर तेरी दया दृष्टि है, वह मेरे लिए सर्वोत्कृष्ट सुरक्षा-कवच है। मैं तेरी शरण चाहता हूँ। सामने के अन्धकार को ज्योति में और अशान्ति को शान्ति में बदल दे, अपने भड़के हुए स्वाभिमान के आक्रोश से हमें सुरक्षित रख। तू यदि कभी कुपित भी होता है तो इसलिए कि फिर (अपने भक्तों पर) प्रसन्नता प्रकट करे। तेरे अतिरिक्त न कोई दूसरी वास्तविक सहायक शक्ति है न शरण का स्थान।

यह दुआ मांग कर आप मक्का की ओर चल पड़े परन्तु मध्य में नख़्ला नामक स्थान पर रुक गए। वहाँ कुछ दिन आराम करके फिर आप मक्का की ओर रवाना हुए, परन्तु अरब के नियमानुसार लड़ाई के कारण मक्का छोड़ देने के पश्चात् आप मक्का-निवासी नहीं रहे थे। अब मक्का वालों का अधिकार था कि वे आप को मक्का में आने देते या न आने देते। इसलिए आप ने मक्का के एक सरदार मुतअम बिन अदी को सन्देश भेजा कि मैं मक्का में प्रवेश करना

चाहता हूँ। क्या तुम अरब के नियमानुसार मुझे आने की अनुमति देते हो? मुतअम कट्टर शत्रु होने के बावजूद एक सुशील स्वभाव व्यक्ति था। उसने उसी समय अपने पुत्रों और परिजनों को साथ लिया और सशस्त्र हो कर का'बा के परिसर में जा खड़ा हुआ और आप को सन्देश भेजा कि वह आप को मक्का में आने की अनुमति देता है। आप ने मक्का में प्रवेश किया, का'बा का तवाफ़ (परिक्रमा) किया और मुतअम अपनी सन्तान और परिजनों के साथ, नंगी तलवारें लिए हुए आप को आप के घर तक पहुँचाने आया। यह शरण नहीं थी क्योंकि इस के पश्चात् मुहम्मद रसूलुल्लाह पर निरन्तर अत्याचार होते रहे तथा मुतअम ने आप की कोई सुरक्षा नहीं की अपितु यह केवल मक्का में प्रवेश करने की नियमानुसार अनुमति थी।

आपस. की इस यात्रा के संबंध में शत्रुओं को भी यह स्वीकार करना पड़ा है कि इस यात्रा में आप ने अद्वितीय बलिदान और धैर्य का आदर्श प्रदर्शित किया है। सर विलियम म्योर अपनी पुस्तक "मुहम्मद" में लिखते हैं —

"मुहम्मद (स.अ.व.) की तायफ़-यात्रा में एक उत्कृष्ट वीरता का रंग पाया जाता है। अकेला व्यक्ति जिस की अपनी जाति ने उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखा और उसे बहिष्कृत कर दिया। ख़ुदा के नाम पर ख़ुदाई मिशन को प्रसारित करने के लिए वीरता के साथ नैनवा के यूनाह नबी की भांति एक मूर्तिपूजक शहर से क्षमा मांगी। यह बात उसके उस ईमान पर कि वह स्वयं को पूर्णतया ख़ुदा की ओर से समझता था, एक प्रखर प्रकाश डालती है।" ①

मक्का ने पुनः पीड़ित करने और उपहासों के द्वार खोल दिए, ख़ुदा के नबी के लिए उस की मातृभूमि पुनः नर्क का नमूना बनने लगी, परन्तु इस के बावजूद मुहम्मद (स.अ.व.) निर्भीकतापूर्वक लोगों को ख़ुदा की शिक्षा पहुँचाते रहे। मक्का के गली-कूचों में "ख़ुदा एक है, ख़ुदा एक है" के स्वर गूंजते रहे। प्रेम से, प्यार से, भलाई से आप मक्का वालों को मूर्तिपूजा के विरुद्ध धर्मोपदेश देते रहे। लोग भागते थे तो आप उनके पीछे जाते थे; लोग मुख फेरते थे तो आप फिर भी बातें सुनाए चले जाते थे। सच्चाई शनैः शनैः हृदयों में घर कर रही थी। वे थोड़े से मुसलमान जो हबशा के प्रवास से बचे हुए मक्का में रह गए थे, वे अन्दर ही अन्दर अपने परिजनों, मित्रों, साथियों में प्रचार कर रहे थे। कुछ के हृदय ईमान के प्रकाश से प्रकाशित हो जाते तो अपने इस्लाम की सार्वजनिक तौर पर घोषणा कर देते, परन्तु बहुत थे जिन्होंने प्रकाश को तो देख लिया परन्तु उन्हें उसे स्वीकार करने का सामर्थ्य प्राप्त नहीं हुआ था। वे उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे जब ख़ुदा की बादशाहत पृथ्वी पर आए और वे उसमें प्रवेश करें।

मदीना वालों का इस्लाम स्वीकार करना

इसी अवधि में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को ख़ुदा तआला की ओर से बार-बार सूचना दी जा रही थी कि तुम्हारे प्रवास का समय आ रहा है तथा आप पर यह भी स्पष्ट हो चुका था कि आप के प्रवास (हिजरत) का स्थान एक ऐसा शहर है जिसमें कुएँ भी हैं और खजूरों के बाग़ भी पाए जाते हैं। आप ने पहले यमामा के संबंध में समझा कि कदाचित् वह हिजरत (प्रवास) का स्थान होगा,① परन्तु आपके हृदय से शीघ्र ही यह विचार निकाल दिया गया और आपस. इस प्रतीक्षा में लग गए कि ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी के अनुसार जो शहर भी निश्चित है वह स्वयं को इस्लाम का केन्द्र बनाने के लिए प्रस्तुत करेगा। इसी बीच हज का समय आ गया। अरब के चारों ओर से लोग मक्का में हज करने के लिए एकत्र होने लगे। मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) अपने स्वभाव के अनुसार जहाँ कुछ लोगों को खड़ा देखते थे उनके पास जा कर उन्हें एकेश्वरवाद का उपदेश देने लग जाते थे तथा ख़ुदा की बादशाहत का शुभ संदेश देते थे तथा अत्याचार, दुराचार, उपद्रव और शरारत से बचने का प्रवचन भी करते थे। कुछ लोग आप की बात सुनते और आश्चर्य प्रकट करते हुए अलग हो जाते। कुछ लोग बातें सुन रहे होते तो मक्का वाले उन्हें वहाँ से हटा देते। कुछ लोग जो पहले से मक्का वालों की बातें सुन चुके होते वे हँसी उड़ाकर आप से पृथक हो जाते। इसी अवस्था में आपस. मिना की घाटी में विचर रहे थे कि छः सात लोग जो मदीना निवासी थे आप को दिखाई दिए। आप ने उन से कहा— आप लोग किस क़बीले से संबंध रखते हो? उन्होंने कहा— 'ख़ज़रज' क़बीले के साथ। आप ने कहा— वही क़बीला जो यहूदियों का हलीफ़ (दो सदस्य जिन्होंने परस्पर सहायता की प्रतिज्ञा की हो) है? उन्होंने कहा हाँ। आप ने फ़रमाया— क्या आप लोग कुछ देर बैठ कर मेरी बातें सुनेंगे? उन लोगों ने चूंकि आप के बारे में सुना हुआ था और हृदय में आप के दावे से एक सीमा तक रुचि थी, उन्होंने आप की बात स्वीकार कर ली और आप के साथ बैठ कर आपस. की बातें सुनने लगे। आप ने उन्हें बताया कि ख़ुदा की बादशाहत निकट आ रही है, मूर्तियाँ अब संसार से मिटा दी जाएँगी, संसार में एकेश्वरवाद की स्थापना कर दी जाएगी, नेकी और सदाचार का एक बार फिर संसार में बोल बाला होगा। क्या मदीना के लोग इस महान ने'मत को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं? उन्होंने आप की बातें सुनीं और प्रभावित हुए और कहा— आप की शिक्षा को तो हम स्वीकार करते हैं, शेष रहा यह कि मदीना इस्लाम को शरण देने के लिए तैयार है या नहीं, इसके लिए हम मदीना जाकर अपनी जाति से बात करेंगे, फिर हम अगले वर्ष अपनी जाति का निर्णय आप को बताएँगे①। ये लोग वापस गए और उन्होंने अपने परिजनों और मित्रों को आपस. की शिक्षा से अवगत कराया उस समय मदीना में दो अरब क़बीले 'औस' और ख़ज़रज रहते थे और तीन यहूदी क़बीले अर्थात् बनू क़ुरैज़ा, बनूनज़ीर और बनू क़ैनक़ाअ। औस और ख़ज़रज में आपस में मनमुटाव था। बनू-क़रैज़ा और बनू नज़ीर औस के साथ और बनू क़ैनक़ाअ खज़रज के साथ मिले हुए थे। दीर्घ समयों से चले आ रहे मन-मुटाव के पश्चात् उनमें यह अहसास पैदा हो रहा था कि हमें परस्पर मैत्री कर लेना चाहिए। अन्ततः परस्पर विचार विमर्श के पश्चात् यह निर्णय लिया गया कि अब्दुल्लाह बिन उब्य्य बिन सुलूल जो ख़ज़रज का सरदार था उसे सम्पूर्ण मदीना अपना बादशाह स्वीकार करे। यहूदियों के साथ संबंधों के कारण औस और ख़ज़रज बाइबल की भविष्यवाणी सुनते रहते थे। जब यहूदी अपने संकटों और कष्टों का वृत्तान्त सुनाते तो उसके अन्त में यह भी कह दिया करते थे कि एक नबी जो मूसा का स्वरूप होगा प्रकट होने वाला है, उसका समय निकट आ रहा है। जब वह आएगा तो हम पुनः एक बार संसार पर विजय प्राप्त करेंगे, यहूदियों के शत्रुओं का विनाश कर दिया जाएगा। जब उन हाजियों से मदीना वालों ने मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के दावे को सुना तो आपस. की सच्चाई उनके हृदयों में घर कर गई और उन्होंने कहा — यह तो वही नबी मालूम होता है जिसकी यहूदी हमें ख़बर दिया करते थे। अतः बहुत से युवक नबी करीम

शेष 7 पर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 16 -23 April 2026 Issue No. 16-17

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{34} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। बयान किया हमसे क़ाज़ी अमीर हुसैन साहिब ने कि मेरा एक बेटा, जो पहली पत्नी से था, फ़ौत हो गया। उसकी माँ ने बहुत रोना-पीटना किया और उसकी नानी ने भी इसी तरह का व्यवहार किया। मैंने उन्हें बहुत रोका, मगर वे नहीं रुकीं। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस लड़के का जनाज़ा पढ़ने आए, तो जनाज़ा के बाद आप खड़े हो गए और काफी देर तक उपदेश करते रहे। अंत में फरमाया कि क़ाज़ी साहिब, अपने घर में भी मेरी यह नसीहत पहुँचा दें। मैं घर आया और पत्नी को हज़रत साहिब का उपदेश सुनाया। इसके बाद उसके दो-तीन और बेटे फ़ौत हुए, मगर उसने आँसू बहाने के सिवा कोई और काम नहीं किया।

{35} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। बयान किया मुझसे मौलवी शीर अली साहिब ने कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ादियान से गुरदासपुर जाते हुए बटाला में ठहरे। वहाँ एक मेहमान, जो आपको खोजते हुए क़ादियान से होकर बटाला वापस आया था, आपके पास कुछ फल उपहार के रूप में लाया। फलों में अंगूर भी थे। आपने अंगूर खाए और फरमाया कि अंगूर में खटास होती है, मगर यह खटास ज़ुकाम के लिए नुकसानदेह नहीं होती।

फिर आपने फरमाया कि अभी मेरा दिल अंगूर चाहता था, इसलिए खुदा तआला ने भिजवा दिए। फरमाया कि कई बार मैंने अनुभव किया है कि जिस चीज़ को दिल चाहता है, खुदा उसे उपलब्ध कर देता है।

फिर एक बार बताया कि मैं एक सफर में जा रहा था कि मेरे दिल में गन्ने के टुकड़ों (पौंडे) की इच्छा पैदा हुई, मगर रास्ते में कहीं गन्ना नहीं मिल रहा था। लेकिन खुदा की कुदरत कि थोड़ी ही देर में एक व्यक्ति मिल गया, जिसके पास गन्ने थे, और हमें वे मिल गए।

{36} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। बयान किया मुझसे हज़रत वालिदा साहिबा ने कि प्रारंभ में एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बहुत तेज़ दौरा पड़ा। किसी ने मिर्ज़ा सुल्तान अहमद और मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद को भी सूचना दे दी और वे दोनों आ गए। उनके सामने भी हज़रत साहिब को दौरा पड़ा।

वालिदा साहिबा कहती हैं कि उस समय मैंने देखा कि मिर्ज़ा सुल्तान अहमद तो आपकी चारपाई के पास चुपचाप बैठे रहे, मगर मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद के चेहरे का रंग बदलता रहता था। वह कभी इधर भागता, कभी उधर। कभी अपनी पगड़ी उतारकर हज़रत साहिब की टाँगों को बाँधता, कभी पैर दबाने लगता, और घबराहट में उसके हाथ काँपते थे।

{37} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। बयान किया मुझसे हज़रत वालिदा साहिबा ने कि जब मोहम्मदी बेगम का विवाह दूसरी जगह हो गया और क़ादियान के सभी रिश्तेदारों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कड़ा विरोध किया और सबने अहमद बेग (मोहम्मदी बेगम के पिता) का साथ दिया, तो हज़रत साहिब ने मिर्ज़ा सुल्तान अहमद और मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद दोनों को अलग-अलग पत्र लिखे कि इन लोगों ने मेरा बहुत विरोध किया है।

अब उनसे हमारा कोई संबंध नहीं रहा और हमारी कब्रें भी साथ नहीं हो सकतीं। इसलिए तुम अपना अंतिम निर्णय करो—यदि तुम मुझसे संबंध रखना चाहते हो, तो उनसे संबंध तोड़ना होगा, और यदि उनसे संबंध रखना चाहते हो, तो फिर मेरा तुमसे कोई संबंध नहीं रहेगा। इस स्थिति में मैं तुम्हें अलग कर दूँगा।

वालिदा साहिबा कहती हैं कि मिर्ज़ा सुल्तान अहमद का उत्तर आया कि मुझ पर ताई साहिबा के उपकार हैं, इसलिए मैं उनसे संबंध नहीं तोड़ सकता। मगर मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद ने लिखा कि मेरा संबंध केवल आपसे है।

हज़रत साहिब ने उत्तर दिया कि यदि यह सत्य है, तो अपनी पत्नी (जो विरोधी थी और अहमद बेग की भांजी थी) को तलाक़ दे दो। मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद ने तुरंत तलाक़नामा लिखकर भेज दिया।

वालिदा साहिबा कहती हैं कि बाद में वह हमारे पास ही रहता था, मगर धीरे-धीरे फिर विरोधियों के साथ मिल गया। वह बहुत शर्मीला था और हज़रत साहिब के सामने आँख नहीं उठाता था। हज़रत साहिब उसके बारे में कहा करते थे कि उसकी प्रकृति सीधी है और उसमें प्रेम है, मगर दूसरों के बहकावे में आ गया।

जब उसकी मृत्यु का समाचार आया, तो उस रात हज़रत साहिब लगभग पूरी रात नहीं सोए और दो-तीन दिन तक उदास रहे।

(इसके बाद लेखक ने मोहम्मदी बेगम और उनके परिवार के रिश्तों और भविष्यवाणी का विस्तृत विवरण दिया है, जिसमें बताया गया है कि विभिन्न घटनाएँ भविष्यवाणी के अनुसार पूरी हुईं।)

{38} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। बयान किया कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक कमरे में खड़े थे, जो मियाँ शरीफ़ अहमद के मकान से लगा हुआ था। मैंने बातचीत में मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन का नाम लिया और केवल "निज़ामुद्दीन" कहा।

हज़रत साहिब ने फरमाया—वह तुम्हारे चाचा हैं, उनका नाम इस तरह नहीं लेना चाहिए।

हालाँकि वे रिश्तेदार होने के बावजूद विरोधी थे, फिर भी हज़रत साहिब के उच्च नैतिक गुणों ने यह बात स्वीकार नहीं की।

{39} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। बयान किया कि एक बार मिर्ज़ा इमामुद्दीन अपने घर में ऊँची आवाज़ में कह रहा था कि ये लोग (हज़रत साहिब की ओर संकेत) काम करके लाभ कमा रहे हैं, हम भी कोई काम करेंगे।

वालिदा साहिबा कहती थीं कि बाद में उसने एक अलग धार्मिक नेतृत्व का दावा शुरू किया। उन्होंने कहा कि मुख्य विरोधी वही था, और उसके मरने के बाद विरोध कम हो गया।

{40} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। बयान किया हमसे क़ाज़ी अमीर हुसैन साहिब ने कि एक बार मेरा ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब से विवाद हो गया। उन्होंने कहा—क्या आप जानते नहीं कि हज़रत साहिब मेरी कितनी इज़्ज़त करते हैं?

मैंने कहा—हाँ, मगर एक बात सुनो। एक बार मैं अमृतसर से क़ादियान गया और हज़रत साहिब से मिला। उस समय हम लोगों ने अभी पूरी शिष्टता नहीं सीखी थी। जब मिलना होता था, तो सूचना देकर अंदर से बुला लेते थे या हज़रत साहिब स्वयं बाहर आ जाते थे।

मैं हज़रत साहिब से मिला। आपने शेख हामिद अली को बुलाकर कहा कि क़ाज़ी साहिब के लिए चाय बनाओ। मगर मुझे डर हुआ कि कहीं यह सत्कार उसी प्रकार का न हो जैसा कमज़ोर ईमान वालों के लिए होता है। मैंने बहुत इस्तिग़फार पढ़ा।

फिर मैंने ख़्वाजा साहिब से कहा कि आपकी इज़्ज़त भी कहीं इसी प्रकार की न हो। और मैंने एक हदीस सुनाई कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ लोगों को इसलिए देते थे कि उनका दिल मजबूत हो जाए, भले ही दूसरे अधिक योग्य हों।

इससे पता चलता है कि जिसका ईमान मजबूत होता है, उसे बाहरी सम्मान की ज़रूरत नहीं होती, उसके साथ अलग प्रकार का व्यवहार किया जाता है।

(बाक़ी अगली कड़ी में)(सीरतुल महदी, भाग प्रथम, पृष्ठ 25 से 30, प्रकाशित क़ादियान)

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad